ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

नवम्बर–२०१८ ◆ वर्ष ७ ◆ अंक ०६ ◆ उदयपुर

नवम्बर–२०१८

तीन अनादि सत्ता जग में,
इक प्रभु हैं इक जीव।
जीव भोग करता सृष्टि का,
पर है वह फलाधीन।
सत्यार्थ प्रकाश
खुलकर समझाता,
सत्ता ये ही तीन।
अनादि तत्त्व हैं तीन।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ८३

श्रेष्ठ क्वॉलिटी, उत्तम स्वाद,
एम.डी.एच. मसालों में है कुछ बात।
MDH मसाले
असली मसाले सच - सच
MDH Chana masala
MDH Garam masala
MDH Peacock Kasoori Methi
Hygienic, Flavourful & Tasty
NET WT. 25g
MDH Chunky Chat masala
MDH Deggi Mirch
CHILLI POWDER MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS
MDH Sambhar masala
MDH Dal Makhani masala
MDH Shahi Paneer masala
MDH Pav Bhaji masala
MDH Kitchen King
DEGGI
ESTD. 1919
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११९
आश्विन कृष्ण अमावस्या
विक्रम संवत्
२०७५
दयानन्दाब्द
१९४

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

November - 2018

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २०१८

१३

०४ वेद सुधा
०९ स्तुता वरदा वेदमाता
११ स्वस्थ समाज का निर्माण कैसे
२० हा हन्त! नहीं रहे स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती
२१ भारतवर्ष के उत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान
२८ ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता-४
२९ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ११/१८
३० अद्भुत सृष्टि का रचयिता- ईश्वर

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ७ अंक - ०६

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

परम पद

किं नो अस्य द्रविणं कद्ध रत्नं वि नो वोचो जातवेदश्चिकित्वान्।
गुहाध्वनः परमं यन्नो अस्य रेकु पदं न निदाना अगन्म। - ऋग्वेद ४/५/१२

(अस्य) इसका, इस संसार का, इस संसार में, (किम् द्रविणम् नः) क्या धन हमारा (है और) (ह) निश्चय से (रत्नम्) रत्न, सार (कत्) कितना (है)? (जात-वेदः)! (चिकित्वान्) संज्ञानी, विवेकी (तू) (नः वि वोचः) हमें विवेचनपूर्वक कह (हमारे प्रति विवेचनपूर्वक उपदेश कर)। (अस्य अध्वनः) इस मार्ग का, इस जीवनपथ पर (गुहा) गुहा में (नः यत् परमम् पदम्) हमारा जो परम पद (है वह) (रेकु) शंकास्पद (है)। (उस परम पद को, उस रहस्य को हम) (निदानाः न अगन्म) निन्दा करनेवाले होकर न प्राप्त कर पाएँ।

१. पीठ पीछे बुराई करने का ही नाम निन्दा नहीं है, अच्छी बातों का उपहास करना (मजाक उड़ाना) और श्रेय के प्रति अनास्थायुक्त होना भी निन्दा है। **'निन्दका निन्दिता भवन्ति'**, निन्दक स्वयं निन्दित हो जाते हैं। निन्दक बनकर किसी ने कभी कोई उपलब्धि प्राप्त नहीं की है। जिसने जो भी उपलब्धि प्राप्त की, प्रशंसक और श्रद्धालु बनकर ही प्राप्त की है श्रद्धावान् बनकर ही की। **'श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्'**, श्रद्धावान् ही तत्व का दर्शन करता है।

साधना के पथ पर श्रद्धावान् को भी शंकाओं से पाला पड़ता है। शंका होना आपत्तिजनक नहीं है, शंकाशील होना बुरा है। योगपथ पर चलते हुए भी योगाभ्यासी को शंकाएँ होती हैं। पर शंका होने पर साधना अथवा सिद्ध की निन्दा नहीं करनी चाहिए, सिद्ध के चरणों में उपस्थित होकर शंका का समाधान करना चाहिए। समाधान और स्पष्टीकरण से पूर्व प्रत्येक विषय रेकु (शंकास्पद) होता है। शंका होने पर 'चिकित्वान् जातवेदाः' की सेवा में उपस्थित होकर जिज्ञासाभाव से शंका उपस्थित करनी चाहिए। 'चिकित्वान्' नाम संज्ञानी और विवेकी का है। जातवेदस् शब्द का प्रयोग यहां उस सिद्ध जन के लिए हुआ है जिसने साधना के आश्रय से तत्व का साक्षात्कार किया है और परिणामस्वरूप जो किसी भी शंका का समाधान कर सकता है।

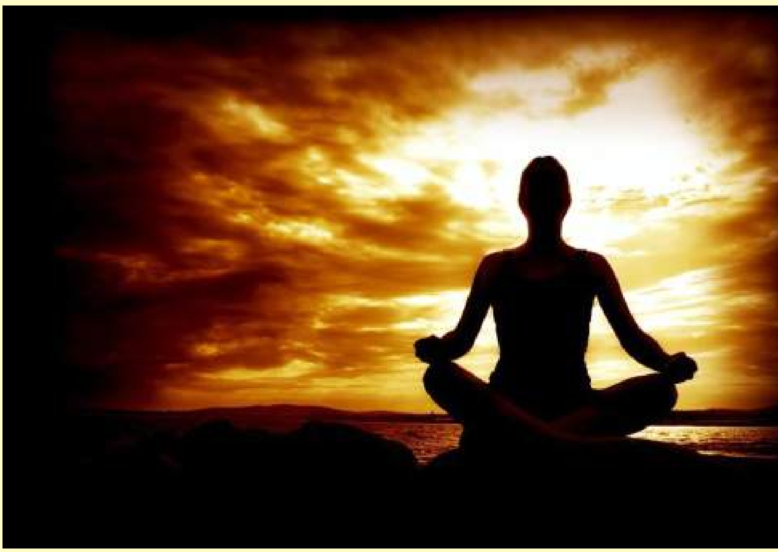

२. जिज्ञासु विवेकी जातवेदाः कर सेवा में उपस्थित होकर अपने दो प्रश्न और एक शंका प्रस्तुत करता हुआ कहता है, जातवेदः! तू चिकित्वान् है, संज्ञानी है, विवेकी है। हमारे दो प्रश्न हैं और एक शंका है। उनकी विवेचना करके उनका समाधान कर।

किं अन्य द्रविणं नः? इस संसार का जो धन है, इस जगत् में जो ऐश्वर्य है, क्या वह हमारा है? संसार के धन में से जितना धन हमारे हिस्से में आया है, क्या वह हमारा है? यह प्रथम प्रश्न है। प्रश्न में ही उसका उत्तर निहित है। अन्यत्र (य ४०.१) में भी प्रश्न किया गया है, **'कस्य स्विद्धनम्'**, किसका है भला धन? और वही उत्तर दिया गया है, **'ईशा वास्यम् इदं सर्वं यत् किं च जगत्यां जगत्'** स्वामी से वासित यह सकल, जो कुछ जगत् में जगत्। यह जगत् और इस जगत् में जो कुछ है वह सब उस स्वामी का है जो इस सबमें बसा हुआ है।

लोक व्यवहार के लिए ही कुछ तेरा है, कुछ मेरा है। पर, वास्तव में, न कुछ तेरा है, न कुछ मेरा है। जो कुछ है वह सब जगतपति का है। अपना वही है जो अपने साथ आए या अपने साथ जाए। जगत् में जो भी द्रविण है, जो भी धन है वह न साथ आया था,

न साथ जाएगा। सब कुछ उपयोगार्थ मिला है। जीते जी उपयोग करके जब प्रयाण किया जाएगा तो मालिक की सम्पदा मालिक के कारखाने में ही छोड़नी होगी। उस समय ज्ञानी यही कहता है,

मेरा जग में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सोंपता, का लागे है मोर।

३. कच्छ रत्नम्, रत्न वा सार कितना है? यह दूसरा प्रश्न है। धन के लिए वेद में भूति शब्द का प्रयोग हुआ है। भूति शब्द के दो प्रसिद्ध अर्थ हैं- खाक और धन। भौतिक धन जितना है वह सब खाक है, राख है। रत्न तो आत्मधन ही है। आत्मधन ही है जो साथ आता है और साथ जाता है। वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं्शरीरम् (यजु. ४०.१५), आत्मा अभौतिक और अविनाशी है, शरीर भौतिक और नाशवान है। शरीर और शरीर से सम्बन्ध रखनेवाला जो कुछ है वह सब मृन्मय है, नाशवान है, मिट्टी है, निस्सार है। आत्मा और आत्मा से सम्बन्ध रखनेवाला जो कुछ है वह सब अमृत है, वही रत्न है, वही सार है।

४. गुहाध्वनः परमं यन्नो अस्य रेकु पदम्, इस जीवन पथ पर गुहा में जो परम पद है वह शंकास्पद है। हृदयाकाशरूप जो अन्तःकरण है वह आत्मा अधिष्ठान है। उसी का नाम गुहा है। चित्त की वृत्तियों का निरोध करके जब गुहास्थ द्रष्टा आत्मा स्वरूप में अवस्थित होकर आत्मसमाहित होता है तो उसे वहाँ ब्रह्म का सन्दर्शन होता है। उसी का नाम परम पद है। परम पद की प्राप्ति पर शरीर में निवास करते हुए आत्मा जीवन्मुक्त विदेह रहता है और शरीर त्यागने पर ब्राह्म मोक्ष प्राप्त करता है। परम पद की प्राप्ति पर योगी जल में मीनवत् सतत ब्रह्मलीन रहता हुआ कर्त्तव्य कर्म करता है और ब्रह्मलीन रहता हुआ ही ब्रह्मरन्ध्र के द्वारा शरीर का त्याग करने पर ब्रह्म में प्रवेश करता है, 'आत्मनात्मानभि सं विवेश' (यजु. ३२.११), आत्मा परमात्मा में प्रवेश करता है। इसी परम स्थिति का नाम परम पद है।

साधनाविहीन कोई कितना भी प्राज्ञ और विद्वान् क्यों न हो, इस पद के विषय में वह शंकाग्रस्त ही रहता है। साधना ही है जो इस शंका का प्रत्यक्ष निवारण करती है। वह पद न प्रज्ञा का विषय है न विद्या का, न पाण्डित्य का विषय है न दन्तकटाकटी का। वह तो अन्तर्मुखता और अन्तस्साधना ही है जो साधक को परम पद के विषय में आश्वस्त और विश्वस्त करती है। जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ। गोताखोर ही गहराई में जाकर मोती बटोरते हैं। प्रज्ञा और विद्या के अभिमानी ज्ञानगपोड़े मारते है; वे मोती नहीं बटोर सकते। अपने आपमें जो जितना गहरा जाता है वह उतना ही उस परम पद का पता लगा पाता है। सिद्ध जन ही इस पद की प्राप्ति की विधि दर्शाते हैं। ऐसे सिद्ध जन के लिए ही वेद में 'मन्त्रो गुरुः' (ऋग्वेद १/१४७/४), मंत्र गुरु (मन्त्रदाता गुरु, रहस्य समझने और समझाने वाला गुरु) कहा गया है।

ज्ञानी गुरु के मार्गदर्शन में यथाविधि साधना के आश्रय से जब साधक आत्मस्वरूप का दर्शन और ब्रह्म का साक्षात्कार कर लेता है तब ही इस शंका का पूर्णतया निवारण होता है। साधना की सिद्धि पर आत्मस्वरूप का अवलोकन करके जब आत्मा कहता है, अवाहम् अस्मि, यहाँ मैं हूँ, और आत्मस्वरूप से ऊपर उठकर जब आत्मा ब्रह्म का साक्षात्कार करता है और स्वयं ब्रह्म उससे कहता है, पश्य मेह, देख मुझे यहाँ, तब ही परम पद के विषय की शंका यर्थाथरूप से निवृत्त होती है।

जिसने देखा है, कहे 'मैंने उसे देखा है।
चाहे जो देखना मैं उसको दिखा सकता हूँ।'

लेखक- स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'
''वेदालोक'' से साभार उद्धृत

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आज इस पावन स्थल पर आने का अवसर प्राप्त हआ। अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना के सन्दर्भ एवं सारे रोचक विषय पर संग्रह अति सराहनीय है। न्यास द्वारा दर्शाया गया दयानन्द जी का पूरा जीवन परिचय अति प्रशंसनीय है। मैं इस न्यास से जुड़े सभी लोगों के प्रति उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

यह पावन स्थल अति वन्दनीय एवं प्रेरणादायक है। मैं इस स्थान को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

महामहीम राज्यपाल गंगा प्रसाद
सिक्किम, गंगटोक

कहने को तो वो दीवाली थी सचमुच में वो दिवाला था।

प्रतिवर्ष जब भी दीपावली का आगमन होता है तो लाखों दीयों की जगमग रोशनी के बीच उत्साह और उमंग का संचरण होता है। अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने का भाव समाज में सम्प्रेषित होता है पर साथ ही कहीं एक टीस का अनुभव भी होता है। कारण कि वो दीपावली का दिन ही था जब उस महान् सन्त ने इस संसार को अलविदा कहा था, जिसने इस देश को ही नहीं सम्पूर्ण विश्व मानवता को 'अपने लिए जीने' एवं 'औरों के लिए जीने' का अन्तर समझाते हुए एक प्रशस्त जीवन दिशा प्रदान की थी जिस पर चलकर मनुष्य मात्र अपना कल्याण कर सकता था, अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सकता था। यूँ तो संसार में कितने ही महापुरुष हुए हैं और सभी ने अपने-अपने चिन्तन के अनुसार समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया, परन्तु जैसा समग्र चिन्तन और समग्र प्रयास महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने किया वैसा देखने को नहीं मिलता। ऋषि दयानन्द का अवतरण जब इस देश में हुआ तब हम राजनीतिक रूप से गुलामी की जंजीरों में जकड़े हुए थे ही परन्तु स्वयं के द्वारा ओढ़ी हुई मानसिक परतंत्रता के कारण अपने और समाज के लिए पतन के गर्त में ले जाने वाली दिशा की ओर धीरे-धीरे अग्रसर हो रहे थे। समाज के लगभग ८५ प्रतिशत तबके को शिक्षा जैसे अमूल्य रत्न से वंचित कर दिया गया था और जब विद्या का स्थान अविद्या का तिमिराच्छन्न परिवेश ले ले तो परिणाम क्या होगा यह आसानी से समझा जा सकता है और वह हुआ भी। स्वार्थ, लालच, ऐषणाओं ने हमारे जीवन पर अधिकार जमा लिया था। नतीजतन वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर अनेकानेक समस्याएँ सुरसा जैसा मुँह खोलकर खड़ी हो गईं थीं। आवश्यकता थी समग्रतापूर्ण निदान की और यह निदान ऋषि दयानन्द ने दिया। इस निदान के क्रम में स्वामी दयानन्द ने लीक से हटकर कई अभिनव प्रयोग किए जो अन्य मनीषियों के जीवन में देखने में नजर नहीं आते। उपयोगिता के दृष्टिकोण से ऋषि दयानन्द ने अनेक परम्पराओं को भी छोड़ दिया। क्योंकि वे परम्पराओं के गुलाम नहीं थे। स्वामी जी संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पंडित थे। धारा प्रवाह संस्कृत में प्रवचन देते थे। परन्तु उन्हें जब अनुभव कराया गया कि अपनी बात जनभाषा में कहने से सन्देश ज्यादा लोगों तक जायेगा तो उन्होंने हिन्दी को अपनाने में तनिक भी संकोच का अनुभव नहीं किया और यहाँ तक कि अपने सारे ग्रन्थ भी हिन्दी में ही प्रणीत किए। परमपिता परमात्मा का ज्ञान, संस्कृत ज्ञान के लोप होने के कारण मुट्ठी भर लोगों की काराओं में कैद होकर रह गया था। ऋषि दयानन्द ने उसको उन्मुक्त करते हुए अपना वेदभाष्य संस्कृत के अलावा हिन्दी में भी प्रस्तुत किया ताकि आमजन भी वेद में क्या है इस बात को जान सकें। यह स्वामी जी का क्रान्तिकारी और अभिनव प्रयोग था और यह हिन्दी मनीषियों के लिए अभूतपूर्व देन थी। उन्हें अपने पाण्डित्य प्रदर्शन का तनिक भी लालच नहीं था। चाहते थे तो केवल यह कि जन-जन वेदों की शिक्षाओं का अनुसरण करने लगे तो, यह भूतल स्वर्ग हो जाये।

सरस्वती सम्प्रदाय के संन्यासी उस समय केवल कोपीन धारण करके घूमते थे। परन्तु जब उनके संज्ञान में लाया गया कि उनको जब प्रवचन समाज के लोगों के समक्ष, नर-नारियों के समक्ष देने हैं तो अच्छा हो वे पूर्ण वस्त्रों को धारण करें तब जिस साहस को आज भी अनेक तर्कशील कहे जाने वाले साधु नहीं कर पाते हैं और अपनी मजहबी मान्यताओं से लिपटे रहते हैं, वहाँ दयानन्द ने कमाल कर किया और सम्पूर्ण वस्त्र पहनने का निश्चय किया। अनेक अभिनव प्रयोग इस क्रान्तिकारी संन्यासी ने किए। विश्व का सबसे पहला धर्म सम्मेलन दिल्ली में इस दृष्टि से आहूत किया कि प्रत्येक मजहब के वरिष्ठजन यदि आपस में विचार-विमर्श करके एक सत्य को

अपनाने पर सहमत हो जाते हैं तो फिर मतजन्य विद्वेष के पनपने का अवसर ही समाप्त हो जाता है। यह बात पृथक् है कि अनेक कारणों से उनको सम्पूर्ण सफलता नहीं मिली।

इस संक्षिप्त आलेख में स्वामी जी की उन सारी विशेषताओं को लिख पाना कतई संभव नहीं है जिनके कारण निःसंकोच कहा जा सकता है कि दयानन्द तो अपने जैसा एक ही था।

पाठकगण यदि ऋषि दयानन्द के जीवन के अंतिम दो तीन वर्षों पर ध्यान दें तो भी एक नूतन और अभिनव प्रयोग ऋषि दयानन्द द्वारा प्रवर्तित उन्हें दिखाई दे सकेगा वो उनकी इस धारणा में निहित है 'यथा राजा तथा प्रजा'। ऋषि दयानन्द ने समझ लिया था कि प्रजा राजा का ही अनुसरण करती है अतः यदि राजा का सुधार हो जाये तो प्रजा के सुधार में उतनी समस्या नहीं आयेगी। अतः ऋषि दयानन्द जी महाराज ने अपने अंतिम समय में अधिकतम समय राजस्थान के रजवाड़ों में गुजारा था।

उनकी योजना थी कि 'यथा राजा तथा प्रजा' के अनुसार अगर इन नरेशों को सुधार के मार्ग पर अग्रसित कर दिया जाए तो प्रजा को भी वैदिकधर्मी बनने में देर नहीं लगेगी। इसीलिए उन्होंने उदयपुर, शाहपुरा तथा जोधपुर को पर्याप्त समय दिया। उदयपुर प्रवास के दौरान महर्षि दयानन्द ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। महाराणा सज्जन सिंह जी अल्प समय में ही उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनके अन्यतम शिष्य बन गए थे और वे प्रतिदिन राजनीति एवं धर्मशास्त्र को पढ़ने के लिए अपने सामन्तों सहित श्री महाराज के पास नियमित आते थे। दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र में अनेक सुधारों के सूत्रपात करने वाले गोविन्द गुरु भी यहीं नवलखा महल में महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आये थे और उन्होंने यहीं से प्रेरणा प्राप्त कर एक विशाल आन्दोलन आदिवासियों के चतुर्दिक उन्नयन के लिए चलाया था। इस छह महीने के प्रवास में ही महर्षि दयानन्द ने जिस प्रकार से महाराणा जी और यहाँ के शासन कार्य को प्रभावित किया उससे प्रमाणित होता है कि उनकी सोच गलत नहीं थी।

ऋषि दयानन्द की स्पष्ट सोच थी कि अगर इन देशी राजाओं में स्वाभिमान के भावों को जाग्रत किया जाए तथा उनमें प्रजापालन, धर्मरक्षा तथा स्वदेश के प्रति अनुराग के भाव को बढ़ावा दिया जाए तो देश के उत्थान में इनकी भूमिका निर्णायक सिद्ध हो सकती है।

स्वामी जी ने यहाँ के राजकार्यों में हिन्दी एवं संस्कृत को अधिकाधिक प्रविष्ट कराने का प्रयास किया। मेवाड़ राज्य के राजपत्र का नाम भी स्वामी जी के परामर्श के अनुसार 'सज्जन कीर्ति सुधाकर' रखा गया। इसी प्रकार राज्य की सर्वोच्च शासन परिषद् को 'महद् राजसभा', वन विभाग को 'शैल कान्तार सभा', उद्योग विभाग को 'शिल्प सभा' का नाम दिया गया। स्वेदशी एवं गोरक्षा के प्रति भी स्वामी जी ने प्रेरणा दी। गोवध को बन्द कराने के लिए स्वामी जी ३ करोड़ भारतवासियों के हस्ताक्षर से एक अपील महारानी विक्टोरिया को भेजना चाहते थे। इसके लिए जो आवेदन पत्र तैयार किया गया था उस पर महाराणा सज्जनसिंह जी ने भी हस्ताक्षर किए थे।

स्वामी जी के परामर्श से ही मेवाड़ के न्यायालयों में देवनागरी लिपि के प्रयोग तथा अभिलेखों में अरबी, फारसी शब्दों के स्थान पर संस्कृत के तत्सम् शब्दों को प्रयुक्त किए जाने की दिशा प्रशस्त हुई। यहीं पर, देश में राष्ट्रीय एकता कैसे संभव हो सकती है इसका स्पष्ट उत्तर पंडित मोहनलाल पण्ड्या को स्वामी जी ने दिया कि जब तक समस्त देशवासी एक धर्म के अनुयायी, एक भाषा के बोलने वाले और एक ही प्रकार के आचार-विचार एवं व्यवहार को धारण कर एक ही लक्ष्य की पूर्ति के लिए सर्वात्मना निश्चय नहीं कर लेते तब तक स्वदेश की एकता और इसकी सर्वांगीण उन्नति स्वप्न मात्र रहेगी। इस प्रकार स्वामी जी के इस प्रवास में किए गए कार्यों का मेवाड़ के शासक व सामन्तों पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

यह हमारा प्रबल दुर्भाग्य था कि अखण्ड ब्रह्मचर्य से ज्योतित उस बलिष्ठ महापुरुष की आयु जहाँ एक सौ से भी ज्यादा वर्ष होनी चाहिए थी जिसके बारे में जोधपुर में उनके पैरों को दबाने वाले व्यक्ति का मत था कि मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मैं किसी लोहे को दबा रहा हूँ, वहाँ उन्हें एक व्यापक षड्यंत्र का शिकार होकर केवल ५६ वर्ष की आयु में अपना कार्य अधूरा

छोड़कर महाप्रयाण करना पड़ा। काश कि ऋषि दयानन्द चारों वेदों का भाष्य कर पाते। जीवन के अंतिम दस वर्षों में उन्होंने जितना कार्य किया उसको देखते हुए यह सोचना भी समीचीन है कि केवल दस वर्ष भी अगर कार्य के लिए उन्हें और मिल जाते तो इस देश में ही नहीं पूरे विश्व में अंधकार का समूल नष्ट होकर सूर्य के समान प्रकाश फैल जाता। परन्तु ऐसा न हो सका, इसीलिए कवि ने बिल्कुल ठीक कहा 'कहने को तो दीवाली थी सचमुच में वो दिवाला था।'

१८८३ की दीपावली के दिन एक दीपक बुझ गया परन्तु बुझने से पहले वह हजारों लाखों दीपकों को जलाकर के अपने कर्तव्य को पूर्ण करके गया। अब बारी हमारी है कि उस ज्योति को जलाये रखें। ऋषि दयानन्द के सन्देश को बाहर से नहीं हृदयंगम करने का दृढ़ निश्चय करें। अगर ऐसा हो जाये तो आज भी वो दिन दूर नहीं जब ऋषि द्वारा दिए गए सत्य ज्ञान के प्रकाश में चुनौती देती हुए समस्त समस्याओं का निराकरण हो सके।

- अशोक आर्य

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

आर्य समाज हिरण मगरी ने मनाया विजयादशमी पर्व

विजयादशमी पर्व के उपलक्ष में आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर में श्री रामदयाल के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्रीमती राधाजी त्रिवेदी ने ईश भजन एवं श्रीमती चन्द्रकान्ता यादव ने रामायण की शिक्षाओं पर भजन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर श्री शंकर लाल विद्यावाचस्पति ने इस पर्व का सही निरूपण करते हुये कहा कि हमें अपने स्वयं की बुराईयों पर विजय पाने की आवश्यकता है तभी समाज एवं देश की बुराईयों पर अच्छाईयों की जीत हो सकती है। संचालन श्रीमती ललिता जी मेहरा द्वारा किया गया। - श्रीमती ललिता मेहरा, मंत्री

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

कठिन परिश्रम, सुन्दर चिन्तन,
और करे जो परोपकार।
असली मंजिल वही है पाता,
यश गाता पूरा संसार।।

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचावें

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु **श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़** ने संरक्षक सदस्यता (₹११०००) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद।

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

स्तुता वरदा वेदमाता

अभिमन्यु कुमार खुल्लर

मंत्र में, जो वर वेदमाता से माँगे गए हैं, उनमें से 'कीर्ति' और 'ब्रह्मवर्चस्व' को, पात्रता अर्जित न होने से, अभी नहीं माँग रहा हूँ। मैं तो यह वर माँगना चाहता हूँ कि महर्षि दयानन्द द्वारा चारों वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, षट्दर्शन, ग्यारह उपनिषदों एवं अन्य अनेक ग्रन्थों के साररूप 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रथम एवं सप्तम सम्मुलास को ठीक-ठीक समझ कर हृदयंगम कर सकूँ, आत्मसात् कर सकूँ।

मैं, यह भी समझना चाहता हूँ कि महर्षि को ब्रह्मयज्ञ (संध्योपासना), देवयज्ञ (अग्निहोत्र), स्तुति, प्रार्थना और उपासना के मंत्रों का संयोजन कर एक उपासना पद्धति क्यों बनानी पड़ी? क्या उनके समय में इस हेतु कोई पूजा-पद्धति लिखित में उपलब्ध नहीं थी? इन प्रश्नों के विस्तार में जाने से पूर्व, स्मरण दिलाना चाहता हूँ कि १४ वर्ष की आयु में सही अर्थों में २१ वर्ष की आयु से गृहत्याग के पश्चात्, ३५ वर्ष की आयु अर्थात् १४ वर्ष तक, रात-दिन २४ घण्टे, महर्षि का आश्रय स्थल मंदिर ही थे। मथुरा में गुरु विरजानन्द जी से, शिक्षा प्राप्ति के समय भी आश्रय स्थल लक्ष्मीनारायण मंदिर की एक कोठरी ही था।

महर्षि द्वारा मंदिरों में देखी गई पूजा किन शब्दावली में की जाती थी, इसका विवरण किसी भी जीवनी लेखक ने नहीं दिया है। मेरी दृष्टि में कोई प्रवचन, कोई लेख अभी तक नहीं आया है। अनुमान किया जा सकता है कि भीषण मानसिक यातना झेल चुके महर्षि ने स्वयं ही इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा हो।

मंदिरों में, मूर्ति के रूप में उपस्थित ईश्वर से, उनकी उपासना विधि से यदि महर्षि दयानन्द परितोष प्राप्त कर लेते तो उनकी ईश्वर की अवधारणा का संकल्प पूरा हो जाता। खोज को विराम मिल जाता। पर ऐसा हुआ नहीं। बोध रात्रि को ही निश्चय हो गया कि 'शिवलिंग' की मूर्ति 'शिव' नहीं है। पूजा-पद्धतियों के गहन अवलोकन से, यह भी पूर्णतया समझ में आ गया, विश्वास हो गया कि ये पूजा-पद्धतियाँ ही ठीक नहीं हैं। महर्षि पूजारी का शब्दार्थ 'पूजा का अरि'- शत्रु करते थे। दुर्भावनावश नहीं करते थे, यह अब समझ में आया।

'देव दयानन्द शरणं गच्छामि' का प्रणयन करते समय यह विचार मानसिक क्षितिज पर कौंधा कि सनातनी (मूर्ति पूजक) भाई किन शब्दों में अपने आराध्यों की पूजा करते हैं, जानना होगा। मैं जन्मजात आर्यसमाजी संस्कार में पला बढ़ा, डी.ए.वी. में अध्ययन करने के कारण मुझे व्यक्तिगत रूप से, किंचित भी जानकारी नहीं थी। विवाह से पूर्व पत्नि श्रीमती स्वदेश मिक्सड बैंक ग्राउण्ड (सनातनी+आर्यसमाजी) की थीं। वह सहज सुलभ भी हैं। सबसे पहिले उनसे ही पूछा। बताया- कुछ भी नहीं बोलते। प्रतिमा के समक्ष हाथ जोड़ते हैं, फूल-फल चढ़ाते हैं। प्रसाद भेंट करते हैं। पुजारी प्रसाद का टुकड़ा मूर्ति के चरणों में रख देते हैं। उस भेंट को भगवान (मूर्ति) द्वारा स्वीकार कर लिया गया, माना जाता है। शेष प्रसाद भक्त को मिल जाता है। वह उस प्रसाद को सिर-माथे पर छुला कर ग्रहण करता है। मूर्ति पर दान-दक्षिणा भी चढ़ाते हैं। गोपनीय रखना हो तो दानपात्र में डाल देते हैं। अभी यही हुआ। ५००

व १००० के नोटों का विमुद्रीकरण होने के बाद तिरुपति बालाजी, वैष्णों देवी, सांई मंदिर, नासिक में गुप्तदान में ये नोट बड़ी संख्या में डाले गये। झंझट खत्म हुई। कालाधन स्वीकार करने में इन तथाकथित भगवानों को कोई आपत्ति नहीं थी। कालाधन गवर्मेन्ट को न सौंप कर भगवान को ही भेंट किया और पुण्य कमाया। उधर पूछताछ, छापेमारी, जेल जाने का आसन्न भय था। पत्नि से चल रही वार्ता का क्रम पकड़ता हूँ। मैंने पूछा- पूजा के नाम बस इतना ही। उत्तर हाँ में मिला। जिज्ञासा जाग्रत हो चुकी थी। अब तक दस-बारह पुरुषों, महिलाओं से यह प्रश्न पूछ चुका हूँ। एक ने तो विषय को गोपनीय बताकर कुछ भी कहने से मना कर दिया। पूजा पद्धति कोई बताने की चीज थोड़े ही होती है, मन की बात है। अन्य

लोगों ने जो बताया सर्वांश में वही था जो पत्नी बता चुकी थी। अपवाद स्वरूप शिवभक्त परिचित व्यास जी ने बताया कि ओम नमः शिवाय का उलट-पलट कर उच्चारण करते हैं, शिवस्त्रोत पढ़ लेते हैं। शिवलिंग का अभिषेक प्रतिदिन तो जल से करते हैं

लेकिन पर्वों पर दूध से करते हैं। मैंने पूछा- ओम नमः शिवाय के अतिरिक्त और कुछ नहीं बोलते। उत्तर- न में था। मैंने व्यासजी से कहा- आपके मंदिर में अन्य देवी देवता भी तो विराजते हैं। उनसे क्या कहते हो? उत्तर था- जल छिड़कते हैं अगरबत्ती से सत्कार करते हैं और आरती के साथ सबकी पूजा हो जाती है। एक ब्राह्मण देवता ने कहा- मैं तो प्रतिदिन पूजा पाठ नहीं करता। मूर्ति दिखने पर नमस्कार कर लेता हूँ। पर पत्नी प्रतिदिन करती है। आगे कहा- घर में मंदिर के समक्ष बैठकर कभी हनुमान चालीसा और कभी सुन्दर काण्ड का पाठ- ऐसा ही कुछ करती रहती है।

शुक्ला जी के मूर्ति के समक्ष नमस्कार कर लेने को पर्याप्त पूजा मान लेने पर पत्नी जी द्वारा वर्णित एक प्रसंग याद आ रहा है। तीन बहनें हनुमान मंदिर गईं। बड़ी बहन ने साष्टांग दण्डवत् प्रणाम किया। दूसरी ने हाथ जोड़ लिये, तीसरी आधुनिका बहन ने हवा में दो उँगलियाँ उछाली, ओष्ठों से स्पर्श किया। कहा- हाय हनु!। पुनः व्यतिरेक हो गया।

शुक्ला जी की पत्नी द्वारा पूजा-पद्धति और अन्य महानुभावों के समानान्तर उत्तरों ने मुझे चौंका दिया। १४ से ३५ वर्ष की आयु तक महर्षि ने यही सब कुछ देखा-सुना। महर्षि के समय के पश्चात् स्थिति और बिगड़ती जा रही है। नए-नए भगवान अवतरित हो रहे हैं; तिरुपति बालाजी, वैष्णोदेवी, दोनों सांई बाबा। एक मुसलमान फकीर साँई बाबा बन गया, उसकी पूजा होने लगी। पूजा की पद्धति सबकी एक जैसी। पूजा का अवसर प्राप्त करने के लिए तिरुपति बालाजी, वैष्णोदेवी, दोनों सांई बाबा आदि अनेक मंदिरों में लम्बी लम्बी कतारें लगती हैं। तिरुपति बालाजी में तो सामान्य दर्शन के लिए जिसमें भक्त हाथ जोड़ ही पाता है कि धकिया दिया जाता है, दिन के हिसाब में लोग पंक्तिबद्ध खड़े रहते हैं। शायद आपको पता हो, तिरुपति बालाजी विश्व का सबसे धनाढ्य मंदिर है। प्रतिदिन डेढ़ करोड़ रुपये मूल्य का चढ़ावा प्राप्त होता है।

इस पृष्ठ भूमि में, महर्षि दयानन्द को ईश्वर का वैदिक स्वरूप निर्धारित कर, उसकी पूजा विधि निर्धारित करना अभीष्ठ था, अनिवार्य था और अपरिहार्य था। महर्षि ने वेदों के २०४१६ (वेद मर्मज्ञ शिवनारायण उपाध्याय) मन्त्रों में से केवल ८ (आठ) मंत्रों का चयन कर, पूजा पद्धति बनाई जिसका नामकरण किया, स्तुति, प्रार्थना और उपासना मंत्र;'

स्तुति यानि गुणगान, रुद्र गान या प्रशंसा। महर्षि स्तुति का अर्थ करते हैं- 'यथार्थ वर्णन'। अर्थात् जस का तस वर्णन। महर्षि वेदसम्मत ईश्वर का यथार्थ वर्णन करते हुए इंगित भी नहीं करते कि हिन्दू पौराणिक मूर्ति पूजकों व अन्य धर्मावलम्बियों का ईश्वर, ईश्वर के लिये अपरिहार्य मापदण्डों पर खरा उतरता ही नहीं है।

स्तुति में ईश्वर का स्वरूप निर्धारित करते हैं। पहिले ही मंत्र में ईश्वर को देव, सविता सम्बोधित कर दुरितानि-दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख के पराभव की प्रार्थना करते हैं। पूजा का अधिकारी बनने की प्रथम और शत-प्रतिशत अनिवार्य सीढ़ी। देव-दिव्यगुणयुक्त, सुखदाता, कामना करने योग्य। सविता- सब जगत् का उत्पादक, ऐश्वर्य दाता। देव व सविता के पश्चात् बताया कि वह ज्योति रूप (हिरण्यगर्भः) है। वह ब्रह्माण्ड के नक्षत्र मण्डल में करोंड़ों अरबों की संख्या में उपलब्ध तारे-सितारों का निर्माण करने वाला, धारण करने वाला, अर्थात् नक्षत्र मण्डल में सितारों की दूरी निश्चित कर अपनी धुरी (एक्सिस) व निश्चित परिधि में भ्रमण कराने वाला है। वही परमात्मा समस्त प्राणी और अप्राणी जगत् का उत्पत्ति कर्त्ता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उससे ही परिव्याप्त है। दो पैर व चार पैर वाले जीव उसने ही बनाए हैं। वह सबका स्वामी प्रजापति है। वही मनुष्यों को आत्मज्ञान दाता, शारीरिक और सामाजिक बल देने वाला है। वही बन्धु-भ्राता के समान परम सहायक है। ऐसे ही परमेश्वर की छाया अमृत (मोक्षदायिनी) है अन्यथा जीव, जन्ममृत्यु के चक्र में चिरकाल फंसा रहेगा। अंतिम मंत्र में कहा गया है- प्रभु! आप अग्नि हो- प्रकाश स्वरूप और सब जगत् को प्रकाशित करने वाले। हमारे कुटिलता युक्त एवं पाप कर्मों को दूर कीजिए।

प्रथम मंत्र में 'दुरितानि का पराभव' और अंतिम मंत्र में जुहराणम एवं एनः से छुड़ाने की प्रार्थना की गई है, वह संयोजन दृष्टव्य है। महर्षि का कमाल देखिए- स्तुति, प्रार्थना और उपासना के आठ मंत्रों के चयन में, इन तीनों पृथक् प्रतीत होते हुए अवयवों का कैसा अपूर्व, अनूठा अद्वितीय गुंफन कर एक सांगोपांग पूजा पद्धति दी है। महर्षि को शतशः सहस्त्र नमन।

सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखाधिकारी (केन्द्र)
२२, नगरनिगम क्वार्टस जीवाजीगंज,
लश्कर ग्वालियर- ४७४००१ (म.प्र.)

हम प्रायः अच्छे की कामना करते हैं। अच्छे दिन लाने की बात करते हैं। करनी भी चाहिए क्योंकि इसी में अच्छाई निहित होती है। लेकिन हम किसकी अच्छाई अथवा उन्नति की कामना करते हैं? अपनी स्वयं की अच्छाई अथवा उन्नति की अथवा परिवार, समाज या राष्ट्र की अच्छाई अथवा उन्नति की? यदि हम केवल अपनी या अपने परिवार की अच्छाई अथवा उन्नति की कामना करते हैं तो वो एक अत्यन्त संकुचित सोच होगी जिसका परिणाम भी वैसा ही होगा। हम एक समाज व राष्ट्र के ही नहीं पूरे ब्रह्माण्ड के अंग हैं। यदि सम्पूर्ण विश्व अथवा ब्रह्माण्ड उन्नति नहीं कर रहा है तो हमारी उन्नति भी अधूरी ही मानी जाएगी। अधूरी मानी ही नहीं जाएगी अपितु वह उन्नति पूर्णतः अधूरी ही होगी और सुरक्षित भी नहीं रह पाएगी। अब पर्यावरण को ही ले लीजिए। यदि किसी स्थान का पर्यावरण प्रदूषित है तो उसका खामियाजा सभी को भुगतना

समग्र सकारात्मक चिंतन ही करता है सम्पूर्ण स्वस्थ समाज का निर्माण

पड़ेगा। आज तो पर्यावरण प्रदूषण की स्थिति इतनी भयावह हो चुकी है कि उससे एक साथ पूरा विश्व ही बुरी तरह से प्रभावित हो रहा है।

निस्संदेह आज कुछ लोग समृद्ध हैं लेकिन पूरे समाज की समृद्धि के अभाव में क्या वो अपनी समृद्धि का ठीक से आनन्द भी ले पा रहे हैं। एक उदाहरण से बात को स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं। समृद्ध परिवारों में महिलाओं के पास बहुत सारे सुन्दर-सुन्दर व कीमती आभूषण होते हैं लेकिन क्या वो उन्हें पहन पाती हैं? स्नैचर उनकी ताक में रहते हैं। जैसे ही वो कीमती आभूषण पहनकर बाहर निकलती हैं कोई न कोई वारदात हो जाती है। इन वारदातों में आर्थिक नुकसान ही नहीं कई बार चोट लगने व जीवन जाने की घटनाएँ भी देखने में आती हैं। इन स्थितियों के लिए कहीं न कहीं सम्पूर्ण समाज व सम्पूर्ण समाज की सोच ही उत्तरदायी है इसमें संदेह नहीं। क्या हमने ऐसे समाज अथवा विश्व की कल्पना की जहाँ हर व्यक्ति सम्मानपूर्वक अपनी आजीविका कमा सके अथवा हर व्यक्ति, हर स्त्री-पुरुष शोषण व उत्पीड़न से पूर्णतः मुक्त हो? यदि संसार का प्रत्येक व्यक्ति आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत नहीं कर रहा है तो हमारा आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करना लगभग असंभव ही होगा। इस संसार में प्रत्येक दृश्यादृश्य वस्तु अथवा घटनाएँ संसार के सभी लोगों की समग्र रूप से मन की कंडीशनिंग अथवा अनुकूलन के कारण ही हैं। सामूहिक विचार ही किसी क्षेत्र विशेष में अच्छी या बुरी परिस्थितियों के निर्माण में सहायक है। जहाँ तक परिस्थितियों के अच्छे या बुरे होने का प्रश्न है अच्छी या बुरी कोई चीज है ही नहीं। हमारी सोच ही किसी वस्तु या घटना को अच्छा या बुरा बनाती है जो हमारे मन की कंडीशनिंग के कारण ही है। आम तौर पर कहा जाता है कि ये सब हमारे कर्मों का फल है। ये भी ठीक है। कर्म हम क्यों करते हैं? किसी विचार के वशीभूत होकर ही न। जब विचार अत्यन्त प्रगाढ़ होकर संकल्प का रूप ले लेते हैं तभी कर्म की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार कर्म और कुछ भी नहीं अपितु मन की कंडीशनिंग ही है चाहे वह एक व्यक्ति द्वारा किया गया कर्म हो अथवा सामूहिक रूप से किया गया कर्म। जब समाज में सभी लोगों की सोच सकारात्मक होगी तभी समग्र रूप से अच्छे कर्मों की भी उत्पत्ति होगी और अच्छे कर्मों से ही स्वस्थ समाज का निर्माण होगा।

आज तमाम विश्व में विपत्तियाँ और विभीषिकाएँ बढ़ती जा रही हैं। जीवन के हर क्षेत्र में शोषण और भ्रष्टाचार व्याप्त है। आतंकवाद और युद्ध जैसी स्थितियाँ सर्वत्र विद्यमान हैं। विश्वव्यापी पर्यावरण असंतुलन तथा प्रदूषण मनुष्य की गलत सोच के कारण ही उत्पन्न हुआ है। प्रदूषण चाहे परिवेशजन्य हो अथवा सांस्कृतिक प्रदूषण। समस्या चाहे जो हो उसका

सीधा सम्बन्ध या तो मानवीय भूलों से अथवा तकनीकी गलतियों से है या लोगों की गलत सोच से। मानवीय गलतियाँ भी मन की कंडीशनिंग का परिणाम हैं तथा गलत सोच भी मन की कंडीशनिंग के लिए उत्तरदायी है।

इस प्रकार आज विश्व में जहाँ भी विषम परिस्थितियाँ व्याप्त हैं उनके लिए विश्व के लोगों की सामूहिक सोच ही उत्तरदायी है। दूसरे लोगों के प्रति, दूसरे धर्म व संप्रदायों के अनुयायियों के प्रति तथा दूसरे राष्ट्रों और क्षेत्रों के लोगों के प्रति असहिष्णुता तथा अस्वीकृति से उत्पन्न विचार ही विश्व में तनाव का प्रमुख कारण है। क्या ये स्थिति अपरिहार्य है?

इसको टाला नहीं जा सकता? बिल्कुल टाला जा सकता है बशर्ते कि सोच में परिवर्तन किया जा सके।

आतंकवाद का मूल बंदूक की गोली या आयुधागार में नहीं है अपितु यह किसी के मन की पैदावार है। क्रान्ति वैचारिक होती है। जब विचार सकारात्मक होते हैं तो वह क्रान्ति सर्जनात्मक होती है। इसके विपरीत नकारात्मक भावों से उत्पन्न परिवर्तन या क्रान्ति विध्वंसात्मक होती है। आज विश्व के विभिन्न भागों में व्याप्त आतंकवाद के मूल में व्याप्त है लोगों की नकारात्मक सोच से उत्पन्न परिवर्तन। यही सोच पीढ़ी दर पीढ़ी संक्रमित हो रही है जो आतंकवाद के मूल में उपस्थित होकर किसी को बंदूक उठाने और फायर करने पर विवश कर देती है।

घृणा को घृणा से, कट्टरता को कट्टरता से अथवा विरोध को विरोध से समाप्त नहीं किया जा सकता यही शाश्वत नियम है। जनमानस में जब तक विरोध या आग्रह उत्पन्न नहीं होता तब तक कोई क्रान्ति, कोई परिवर्तन संभव ही नहीं है इसके लिए ऊपर से चाहे जितना प्रयास कर लें। सामूहिक सोच में परिवर्तन द्वारा ही क्रान्ति या परिवर्तन लाया जा सकता है। तन को नहीं मन को छूना पड़ता है। पूरे समाज को प्रशिक्षित कर सामूहिक सोच बदली जा सकती है।

बाह्य युद्ध की समाप्ति अन्दर से ही प्रारम्भ हो सकती है। युद्धभूमि में अथवा नियंत्रण रेखा पर युद्ध की शुरूआत की तरह युद्धविराम अथवा स्थायी शान्ति भी किसी के मन में व्यापती है बाद में समरांगण में। स्वस्थ समाज और विश्व के निर्माण के लिए युगों-युगों से हम सामूहिक सकारात्मक चिन्तन का मार्ग अपनाए हुए हैं तभी तो वैदिक काल से आज तक हम यही प्रार्थना दोहराते आ रहे हैं-

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत।।

मात्र इसी सोच में निहित है पूरे समाज तथा पूरे विश्व की उन्नति और कल्याण। बार-बार यही दोहराएँ तथा इसी को जीवन दृष्टि बनाएँ।

सीताराम गुप्ता
ए. डी.-१०६- सी, पीतमपुरा
दिल्ली-११००३४, चलभाष- ०९५५५६२२३२३

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०८/१८ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०८/१८ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री बीरेन्द्र कर; शिशुपालगढ़ (भुवनेश्वर), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री गोरवर्धन लाल झंवर; सिहोर (म.प्र.), श्री वासुभाई मगनलाल ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; साबरकांठा (गुजरात), श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (म.प्र.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; आर्य समाज शाहपुरा (भीलवाड़ा), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; भोपाल (म.प्र.), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजय नगर (राज.), श्री बाबूलाल आर्य; मन्दसौर (म.प्र.), श्रीमती परमजीत कौर; नारायण विहार (नई दिल्ली), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री किशनराम आर्य बीलू; नागौर (राज.), श्री श्याम मोहन गुप्ता; विजयनगर (इन्दौर, म.प्र.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; सैनिक विहार (दिल्ली), ज्योति कुमारी; महेन्द्रगढ (हरियाणा), प्रधान जी; आर्यसमाज, बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी; बीकानेर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा)।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०९/१८ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०९/१८ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री इन्द्रजीत देव; यमुना नगर (हरियाणा), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री गोरवर्धन लाल झंवर; सिहोर (म.प्र.), श्री वासुभाई मगनलाल ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; साबरकांठा (गुजरात), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; भोपाल (म.प्र.), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजय नगर (राज.), श्री बाबूलाल आर्य; मन्दसौर (म.प्र.), श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री श्याम मोहन गुप्ता; विजयनगर (इन्दौर, म.प्र.), प्रधान जी; आर्यसमाज, बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी; बीकानेर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), श्री रामदत्त आर्य; धोलपुर (राज.)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ २४ पर अवश्य पढ़ें।

प्रातःकालीन यज्ञ

उदयपुर स्थित नवलखा महल में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के तत्वावधान में २१वें सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का प्रारम्भ दिनांक ६ अक्टूबर २०१८ को प्रातः डॉ. सोमदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न यज्ञ द्वारा हुआ, जिसमें मुख्य यजमान सिक्किम के राज्यपाल महामहिम श्री गंगाप्रसाद जी थे। श्री इन्द्रदेव पीयूष के द्वारा ईश भक्ति के भजन प्रस्तुत किए गए। डॉ. सोमदेव शास्त्री ने 'ओ३म्' नाम की महिमा का विस्तृत विवेचन करते हुए कहा कि अ,उ एवं म् सृष्टि-उत्पत्ति, पालन एवं उपसंहार के प्रतीक हैं, ईश्वर तीन प्रकार की शक्तियों का प्रतीक है। यही ओंकार ईश्वर का निज मुख्य नाम है।

ध्वजारोहण समारोहः- महोत्सव का विधिवत शुभारम्भ महामहिम राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद जी द्वारा ओ३म् ध्वजोत्तोलन के साथ हुआ। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतहनगर की बालिकाओं द्वारा शौर्य प्रदर्शन किया गया जिसमें तलवारबाजी एवं विभिन्न शारीरिक व्यायामों का प्रदर्शन किया

शौर्य प्रदर्शन

21वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव - सचित्र विवरण

गया। ध्वजगान श्री इन्द्रदेव जी पीयूष के नेतृत्व में देशभर से उपस्थित सैंकड़ों आर्यजनों ने भक्ति और श्रद्धा से ओतप्रोत होकर किया।

वेद सम्मेलनः- महोत्सव का प्रारम्भ वेद सम्मेलन से हुआ जिसकी अध्यक्षता इस न्यास के न्यासी एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने की। मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद जी थे। वेद सम्मेलन में श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि महर्षि दयानन्द के छह महीने का उदयपुर प्रवास राजपूताना को नई दिशा देने वाला था। महाराणा सज्जन सिंह जी के निमंत्रण पर उदयपुर पधारे स्वामी दयानन्द सरस्वती ने न केवल राजाओं अपितु जनसाधारण को भी अपने उपदेशों से लाभान्वित किया जिससे गोविन्द गुरु जैसे अनेकों समाज सुधारकों को एक नई दिशा एवं ऊर्जा प्राप्त हुई। स्वामी जी ने गो-वध प्रतिबन्ध के लिए तत्कालीन महारानी विक्टोरिया को प्रेषित करने हेतु हस्ताक्षर अभियान चलाया। गो-रक्षा के प्रति महर्षि की योजना दिग्दर्शन उनके लघु ग्रन्थ 'गो करुणानिधि' में मिलता है। महर्षि ने सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का एकमात्र उपाय हिन्दी भाषा को माना। उन्हीं का प्रभाव था कि मेवाड़ के राजकीय अभिलेखों में देवनागरी लिपि का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। महर्षि का मन्तव्य था कि एक धर्म, एक भाषा, एक समान व्यवहार एवं एक लक्ष्य से ही स्वराज्य की प्राप्ति सम्भव है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उदयपुर के नवलखा महल में अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन सम्पूर्ण किया जो कि मानव मात्र के लिए एक आदर्श आचार संहिता है, जिससे मनुष्य मात्र को अपने कर्तव्य-अकर्तव्य, धर्म-अधर्म, भक्ष्य-अभक्ष्य का सम्यक्

ध्वजारोहण

बोध होता है।

वेद सम्मेलन में अमेठी से पधारे डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने 'वैदिक शिक्षाएँ ही विश्व शान्ति का आधार' विषय पर सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि वेद, भाषा और लिपि से भी अधिक प्राचीन है। वैदिक संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है जिसकी पुष्टि भाषा विज्ञान में सार्वभौमिक रूप से होती है। उन्होंने कहा कि वेद ही एकमात्र ऐसे ग्रन्थ हैं जो किसी सम्प्रदाय-विशेष, मत-विशेष का समर्थन न करते हुए मानव मात्र के कल्याण की कामना करते हैं। 'आनो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतः' के माध्यम से सम्पूर्ण मानवों के सर्वांगीण कल्याण हेतु ईश्वर से प्रार्थना, मात्र वैदिक धर्म करता है। प्रायः सभी मजहब मात्र अपने अनुयायियों के कल्याण की कामना करते हैं जबकि वेद 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के साथ मानव मात्र का हितैषी है। 'स्वस्ति पंथा न्यास, भीनमाल' के संस्थापक अध्यक्ष आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने 'सृष्टि रचना में वेद मंत्रों की भूमिका' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि सत्-असत् की स्थिति से पूर्व वेद ही वह एकमात्र प्रेरक शक्ति थी जिसने सृष्टि रचना की प्रारम्भिक क्रियाओं को प्रारम्भ करवाया। परा, पश्यन्ति, मध्यमा एवं वैखरी ये चार मूल कारण हैं सृष्टि की उत्पत्ति में। वर्तमान विज्ञान मात्र वैखरी एवं मध्यमा तक सीमित है। पश्यन्ति एवं परा दोनों ही विज्ञान की पहुँच से दूर हैं। ये दोनों मस्तिष्क से मन एवं मन से आत्मा तक निर्माण की प्रक्रिया को रेखांकित की जाने वाली शक्तियाँ हैं। उन्होंने कहा कि वेदों में सूत्र रूप में कॉस्मोलॉजी पूर्ण रूप से विद्यमान है। आवश्यकता है प्रयोगों के माध्यम से उन सिद्धान्तों को पुनर्स्थापित करने की। उन्होंने आह्वान किया कि आर्यजन इस महान् कार्य को प्रारम्भ कर पूर्णता तक पहुँचाने में यदि तन-मन-धन से सहयोग करें तो वेदों की वैज्ञानिकता सम्पूर्ण विश्व में निश्चित रूप से सिद्ध की जा सकेगी।

> **"सत्यार्थ प्रकाश एक आदर्श आचार संहिता है।**
> – महामहिम राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद"

महोत्सव में महामहिम राज्यपाल

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से महर्षि के सिद्धान्तों तथा वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार के लिए आर्यजन सतत् प्रयत्नशील हैं। उन्होंने आगामी २५ से २८ अक्टूबर २०१८ को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में अधिकाधिक संख्या में पधारकर अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफलता प्रदान करने के लिए उपस्थित आर्यजनों का आह्वान किया। इस अवसर पर श्री आनन्द आर्य, स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती-पिण्डवाड़ा, साध्वी उत्तमायति जी-अजमेर, श्री विजय कुमार शर्मा एवं श्री योगेशदत्त जी बिजनौर ने अपने आशीर्वचन प्रस्तुत किए। अतिथियों का स्वागत श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि सिक्किम के राज्यपाल महामहिम श्री गंगाप्रसाद जी का मेवाड़ी पाग एवं उपरणा पहनाकर अभिनन्दन किया गया। साथ ही मेवाड़ की आन-बान-शान के प्रतीक महाराणा प्रताप की प्रतिमा से सुसज्जित स्मृति चिह्न भेंट किया गया। संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

आर्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रेरक प्रस्तुतियांः- अपराह्न द्वितीय सत्र में महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय,

बच्चों, युवाओं व जादूगर की अनूठी प्रस्तुतियाँ

फतहनगर एवं वैदिक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, आबूरोड के छात्र-छात्राओं द्वारा मोहक प्रस्तुतियाँ एवं ऋषि भक्ति के भजन प्रस्तुत किए गए। इस सत्र की अध्यक्षता श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के न्यासी एवं आर्य समाज, आबूरोड के प्रधान श्री मोतीलाल आर्य ने की। मुख्य अतिथि आर्य समाज, फतहनगर के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र मित्तल थे। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के मंत्री श्री संजय शाण्डिल्य ने किया।

राष्ट्र चिन्तन सम्मेलनः- प्रथम दिन सायंकाल 'राष्ट्र चिन्तन सम्मेलन' के अन्तर्गत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य ने निरूपित किया कि 'अनेकता में एकता' एक भ्रम है। अनेकता में एकता कभी हो ही नहीं सकती। इसलिए सत्य को अपनाकर के, जो कि एक ही होता है, जिस दिन राष्ट्र में एकत्व की स्थापना हो जायेगी उस दिन अनेक समस्याओं का समाधान हो जायेगा। सीताबाड़ी से पधारे आचार्य वेदप्रिय शास्त्री ने राष्ट्र निर्माण के आवश्यक तत्वों का निरूपण करते हुए सबल सक्षम और सुखमय राष्ट्र निर्माण की दिशा को प्रस्तुत किया। दिल्ली से पधारे विद्वान् डॉ. देवशर्मा वेदालंकार ने आज राष्ट्र के समक्ष जो ज्वलन्त समस्याएँ मुँह फाड़े खड़ी हैं उन्हें प्रस्तुत करते हुए उनका समाधान प्रस्तुत किया। इस अवसर पर श्री विनोद राठौड़, उदयपुर एवं श्री केशवदेव शर्मा, सुमेरपुर एवं श्री योगेशदत्त, बिजनौर ने भजन प्रस्तुत किए। साध्वी पुष्पा

सरस्वती ने अपने सुमनोहर उपदेश से श्रोताओं को प्रेरणा दी वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे न्यास के प्रमुख न्यासी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल के प्रधान श्री दीनदयाल गुप्त ने राष्ट्र के समक्ष इस समय जो अभूतपूर्व संकट विद्यमान है उससे सावचेत रहते हुए आर्यसमाजियों को अपनी सार्थक भूमिका निभाने हेतु आह्वान किया।

> **सत्यार्थप्रकाश के प्रचार-प्रसार करने से ही ऋषि ऋण से उऋण हो सकते हैं।** - स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती

द्वितीय दिवस में महोत्सव का शुभारम्भ प्रातःकालीन यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री थे जिन्होंने यज्ञ के आध्यात्मिक स्वरूप पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि भू-भुवः-स्वः ये तीनों पृथ्वी, द्युलोक तथा अन्तरिक्ष लोक का प्रतिनिधित्व करते हैं। यज्ञ इन तीनों की शुद्धि एवं पवित्रता का सर्वोत्तम साधन है। मन, प्राण एवं आत्मा भी इन तीनों के प्रतीक होते हुए यज्ञ से ही ऊर्जा प्राप्त करते हैं। श्री इन्द्रदेव जी पीयूष के ईश भक्ति पर रसमय भजन हुए। संयोजन श्री इन्द्रप्रकाश यादव ने किया।

सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलनः- प्रातः कालीन सत्र में सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन न्यास के संस्थापक न्यासी स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, (सांसद-सीकर) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी जी ने कहा कि साध्य प्राप्ति के लिए साधक

महोत्सव में उपस्थित न्यासीगण

एवं साधन की आवश्यकता होती है। वर्तमान में आर्य समाज के पास साधन और साधक दोनों का अभाव है। उत्कृष्ट विद्वानों के दिवंगत होने पर उनकी क्षतिपूर्ति स्वरूप नवीन विद्वानों का उदय न होना तथा विभिन्न संगठन एवं संस्थाओं में विभक्त होने से साधनों का बट जाना आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में एक बड़ी बाधा है। उन्होंने आर्यजनों का आह्वान किया कि पारस्परिक विखण्डन को दूर कर संगठित होकर सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार-प्रसार करने से ही ऋषि ऋण से उऋण हो सकते हैं।

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा के भूतपूर्व कुलपति प्रो. डॉ. परमेन्द्र कुमार दशोरा ने अपने उद्बोधन में सत्यार्थ प्रकाश को माता पिता व आचार्य की अनुपस्थिति में एकमात्र गुरु बताया। उन्होंने कहा कि यह ग्रन्थ मानव निर्माण में परम सहायक है। उन्होंने कहा कि ईश्वर के विविध नामों से भ्रमित न होकर एक ईश्वर की स्वीकार्यता भारत को पुनः विश्व गुरु की पदवी पर पहुँचा सकती है। दिल्ली से पधारे आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने एकेश्वरवाद को सच्ची भक्ति साधन पद्धति बताया। उन्होंने बताया कि प्राणायाम से धारणा व ध्यान के द्वारा समाधि तक पहुँचकर व्यक्ति मोक्ष मार्ग तय करता है। इस सबका प्रतिपादन महर्षि

दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सुदृढ़ रूप से किया है। सत्यार्थ प्रकाश विश्वभर को महर्षि की अनूठी देन है।

मुम्बई से पधारे डॉ. सोमदेव शास्त्री ने सत्यार्थ प्रकाश को क्रान्तिकारी ग्रन्थ बताया। उन्होंने कहा कि सैंकड़ों क्रान्तिकारियों ने सत्यार्थ प्रकाश से ही स्वदेश प्रेम, स्वधर्म तथा स्वराज्य की शिक्षा प्राप्त की। 'लाडो बसन्ती' नामक ग्रन्थ की लेखिका का उद्धरण देते हुए उन्होंने बताया कि किस प्रकार अनेकों विधर्मी सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर एवं वैदिक विद्वानों से शंका समाधान कर वैदिक धर्म में न केवल दीक्षित हुए अपितु आगे चलकर वैदिक धर्म के प्रबल प्रचारक भी बने।

सम्मेलन के आरम्भ में सीताबाड़ी से पधारे आचार्य वेदप्रिय शास्त्री ने 'मानव निर्माण में सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका' विषय पर बोलते हुए कहा कि प्रशस्त, धार्मिक एवं विद्वान् माता-पिता एवं आचार्य मिलकर बालक का निर्माण करते हैं। इन तीनों में से एक भी अयोग्य हो तो श्रेष्ठ मानव का निर्माण सम्भव नहीं है। श्रेष्ठ माता-पिता बनने के लिए ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश के आरम्भिक दस समुल्लासों के अन्तर्गत समुचित निर्देशों को समाविष्ट किया है। जिनमें ईश्वर वर्णन, बाल शिक्षा, अध्ययन-अध्यापन पद्धति, गृहस्थ धर्म शिक्षा, वानप्रस्थ, संन्यास विधि, राजधर्म, सृष्टि-उत्पत्ति, भक्ष्य-अभक्ष्य इत्यादि का विस्तृत एवं सारगर्भित वर्णन किया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने अपने उद्बोधन में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए त्रिसूत्रीय कार्ययोजना बनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए सत्यार्थ प्रकाश

के मूल सिद्धान्तों को फ्लेक्स, पेम्फलेट्स एवं ट्रेक्ट्स के रूप में विभिन्न संस्थाओं, समितियों, संगठनों के कार्यक्रमों में वितरित किया जाए जिससे सत्यार्थ प्रकाश की महत्ता जन-जन तक पहुँचे। शिक्षण संस्थाओं में निबन्ध, वाद-विवाद, भाषण, प्रश्नोत्तरी इत्यादि विविध प्रतियोगिताओं के माध्यम से सत्यार्थ प्रकाश एवं वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया जाए। 'घर घर यज्ञ हर घर यज्ञ' की योजना चलाकर यज्ञ के माध्यम से सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए। इस अवसर पर न्यास-संरक्षक श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री रासासिंह रावत, (पूर्व सांसद, अजमेर) न्यासी श्री भरतभाई ओमप्रकाश आदि उपस्थित थे। श्री योगेशदत्त जी के भजनों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

अंधविश्वास का उन्मूलन आर्ष ज्ञान द्वारा ही संभव है।
–आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

उदयपुर नगर निगम के उपमहापौर श्री लोकेश द्विवेदी ने नवलखा महल एवं श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास को निगम की ओर से हरसंभव सहयोग उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया साथ ही न्यास के कार्यक्रमों की भूरि-भूरि प्रशंसा एवं सराहना की। कार्यक्रम का संयोजन श्री ओमप्रकाश वर्मा, प्रधान आर्य समाज, किशनपोल बाजार, जयपुर ने किया एवं धन्यवाद न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने ज्ञापित किया।

अतिथि, वक्ता तथा भजनोदपेशक

संस्कृति एवं संस्कार सम्मेलनः- संस्कृति एवं संस्कार सम्मेलन के अवसर पर डॉ. देव शर्मा ने युवा पीढ़ी के निर्माण में संस्कारों की भूमिका पर अपना चिन्तन तथा अपना शोध प्रस्तुत किया वहीं साध्वी पुष्पा सरस्वती ने आज जो भारतीय समाज के समक्ष पाश्चात्य प्रभाव से अपसंस्कृति का प्रभाव हो रहा है उसके दुष्प्रभावों से कैसे बचा जाये, इस संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किए। सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की संचालिका साध्वी उत्तमायति ने इस पैर पसारती हुई अपसंस्कृति पर अपनी चिन्ता व्यक्त की और चेतावनी दी कि इससे पहले कि यह अपसंस्कृति प्रत्येक परिवार को अपनी लपेट में ले उससे पहले ही इसके निराकरण का प्रयास अवश्य किया जाना चाहिए।

उदयपुर ग्रामीण के विधायक श्री फूलसिंह मीणा, न्यास के न्यासी व आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के प्रधान श्री विजय सिंह भाटी, नगर विकास प्रन्यास, अलवर के पूर्व अध्यक्ष श्री प्रदीप आर्य, ने अपने उद्बोधन से श्रोताओं को लाभान्वित किया। डॉ. सीमा श्रीमाली, चित्तौड़गढ़ ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

प्रातः कालीन यज्ञ से तीसरे दिवस के महोत्सव का शुभारम्भ हुआ। यज्ञ आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय द्वारा सम्पन्न कराया गया। इस सत्र में श्री केशवदेव शर्मा द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने बताया कि गायत्री मंत्र में स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना तीनों का मेल है। इसका स्मरण करने से उपासक को विलक्षण बुद्धि प्राप्त होती है जिससे उसके जीवन के समस्त कार्य सिद्ध होते हैं। जप करते हुए जब उपासक को मनवांछित सिद्धि प्राप्त नहीं होती तब ईश्वर से सहायता की जाती है उसे प्रार्थना कहते हैं। प्रार्थना के उपरान्त अपने अभीष्ट की प्राप्ति के लिए जो श्रम किया जाता है उसे ही पुरुषार्थ कहते हैं।

अंधविश्वास निर्मूलन सम्मेलन एवं समापन समारोहः- इस सत्र की अध्यक्षता श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के न्यासी श्री खुशहाल चन्द्र आर्य ने की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि जो सृष्टिक्रम के प्रतिकूल है, बुद्धि रहित बिना प्रमाण और तर्करहित होते हुए भी, समान्यजन जिसे परम्परागत रूप से मानते चले आ रहे हैं उसे अंधविश्वास या पाखण्ड कहते हैं। दुर्भाग्य है कि दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों, धर्मगुरुओं द्वारा इसको विस्तार मिल रहा है।

डी.ए.वी. संस्थाओं के पूर्व क्षेत्रीय निदेशक श्री एम. एल. गोयल, जयपुर ने बताया कि इन अंधविश्वासों और पाखण्डों का प्रारम्भ घर से ही होता है। अमेठी से पधारे डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने कहा कि सर्वाधिक अंधविश्वास हिन्दुओं में है जिसे धर्म और ईश्वर के नाम पर धर्मगुरुओं द्वारा फैलाया जा रहा है। निज स्वार्थ, निज मत, निज प्रवृत्ति, निज प्रतिष्ठा के लिए जो मत चलाया जाता है, वह धर्म नहीं सम्प्रदाय है जो मनुष्यों द्वारा चलाया जाता है। धर्म तो परमेश्वर द्वारा चलाया गया है।

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर के कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि कर्म करने के पश्चात् व्यक्ति कर्मफल के लिए टोना-टोटका का सहारा लेता है ताकि मन माफिक परिणाम प्राप्त हो सके। अशिक्षित ही नहीं आज का शिक्षित युवा भी इन अंधविश्वासों में आकण्ठ डूबा हुआ है। उन्होंने कहा कि यदि युवा अपने परिश्रम पर दृढ़ विश्वास रखकर कार्य करे तो निश्चित रूप से उसको सफलता मिल सकती है।

सभी विद्वानों का एक ही मत था कि युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के साथ उन्हें तर्कपूर्ण शिक्षा देकर इस अंधविश्वास का उन्मूलन किया जा सकता है और जन साधारण के लिए नुक्कड़ नाटक द्वारा, दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों द्वारा, एवं विद्यालयों में इससे सम्बन्धित रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत कर इसका उन्मूलन किया जा सकता है।

'सत्यार्थदूत' श्रीमती सरोज आर्या का अभिनन्दन

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के समारोहों में महती भूमिका निभाने एवं न्यास को समय-समय पर अपने द्वारा रचित निःशुल्क साहित्य उपलब्ध कराने वाली लेखनी की धनी, जयपुर की विदुषी लेखिका, जिन्होंने विभिन्न सिद्धान्तों पर अत्यन्त सारगर्भित १६ पुस्तकें लिखी हैं, उनकी प्रतिभा को नमन करते हुए न्यास द्वारा श्रीमती सरोज आर्या को महाराणा प्रताप की प्रतिमा का स्मृति चिह्न, श्रीफल भेंटकर, उपरणा ओढ़ाकर एवं शॉल पहनाकर सम्मानित किया गया।

रेवाड़ी से पधारी साध्वी पुष्पा सरस्वती ने अपनी ओजस्वी और प्रखर वाणी में कहा कि देश में व्याप्त अन्धविश्वास व पाखण्ड का उन्मूलन यदि कोई कर सकता है तो वह केवल और केवल आर्य समाज कर सकता है। आर्य समाज ही ऐसी संस्था है जो अपने तर्क द्वारा और आर्ष ज्ञान द्वारा सामान्य जनता को इससे बाहर निकाल सकती है।

इस अवसर पर स्थानीय दैनिक भास्कर के मुख्य सम्पादक श्री त्रिभुवन ने अपने सारगर्भित विचार प्रकट किए। श्री केशवदेव शर्मा व श्री योगेशदत्त जी ने भजन/गीत प्रस्तुत किए। इसी सत्र में 'ढोल की पोल' के अन्तर्गत जादूगर राजतिलक ने ऐसे, हैरान कर देने वाले कई करतब दिखाए जो प्रायः बाबाओं द्वारा सिद्धि के नाम पर दिखाए जाते हैं, पर राजतिलक ने उन तथाकथित चमत्कारों की पोल खोलकर वास्तविकता का दिग्दर्शन कराया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया और डॉ. अमृत लाल तापड़िया, संयुक्त मंत्री, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रस्तुति- भूपेन्द्र शर्मा, सत्यप्रिय शास्त्री, सरोज आर्या

हा हन्त! नहीं रहे स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती

ऋषि तुल्य व्यक्तित्व के धनी, साहित्यकार-संन्यासी, 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की ऊर्ध्वमुखी चेतना की मशाल को निरन्तर प्रज्ज्वलित करने वाले, निष्काम कर्मयोगी, साहित्य एवं अध्यात्म को एक ही साथ अपनी सांस-सांस पर जीने वाले संन्यासी, कवि, लेखक, नाटककार, अभिनेता, पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, चित्तौडगढ़ के अधिष्ठाता और इस न्यास के संस्थापक न्यासियों में से एक श्री स्वामी जी का दिनांक १६ अक्टूबर २०१८ को दिल्ली में निधन हो गया।

स्वामी जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे जो कि शब्दातीत है। अनेकों लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकारों ने स्वामी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को सहस्रों पृष्ठों में लिखने का प्रयास किया, पर लगता है वह भी कम पड़ गया। कन्या गुरुकुल के अतिरिक्त इस न्यास के उत्थान में स्वामी जी का अवदान स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य है। आज स्वामी जी का पार्थिव शरीर भले ही हमसे पृथक् हुआ है परन्तु उनका यशः शरीर सदैव-सदैव के लिए जीवित रहेगा। न्यास के सभी मान्य न्यासियों की ओर से, सत्यार्थ सौरभ के सभी सदस्यों की ओर से तथा अपनी ओर से स्वामी जी के प्रति श्रद्धाञ्जलि प्रकट करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

इस अवसर पर कविवर डॉ. किशोर काबरा द्वारा रचित, स्वामी जी के व्यक्तित्व को परिभाषित करती हुई एक कविता यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं-

– अशोक आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

प्रणव के विस्फोट थे, आनन्द थे तुम !
इस तरह परिपूर्ण ओमानन्द थे तुम !
इस तरह परिपूर्ण ....
एक लावा घुमड़ता भीतर तुम्हारे,
किन्तु बाहर हास्य के बहते पनारे।
मुखरता में शब्द के ज्वालामुखी थे।
मौन में निःशब्द के सूरजमुखी थे।
संयमी थे, पूर्णतः स्वच्छन्द थे तुम !
इस तरह परिपूर्ण ....
अर्थ से परिव्याप्त मुखमुद्रा तुम्हारी,
चीर देती ज्यों दुधारी हो कटारी।
जीभ से निकलें भले ही वन्दनाएँ,
किन्तु आँखों से छलकतीं व्यंजनाएँ।
अमिय विषमय पूर्णिमा के चन्द थे तुम !
इस तरह परिपूर्ण ....
पुष्प से मृदु, वज्र से कटु मन तुम्हारा,
शत विरोधों से बुना जीवन तुम्हारा।
कहकहों में अश्रु अगणित पी रहे थे,
शाप ओढ़े वर बिछाए जी रहे थे।
चपल होकर भी सतत् निष्पन्द थे तुम !
इस तरह परिपूर्ण ....
कुशल थे, पर अज्ञता का स्वांग धरते,
माँग जिनकी हो, उन्हीं से माँग करते।
कूट और कुशाग्र प्रज्ञा के धनी थे,
किन्तु विगलित करुण श्रद्धा के ऋणी थे।
कमल के भीतर छिपे मकरन्द थे तुम !
इस तरह परिपूर्ण ....
ऐन्द्रजालिक शब्द-संयोजन तुम्हारा,
काव्य के गूढ़ार्थ को देता सहारा।
तुम कथा थे, तुम कथन थे, तुम कथक थे,
तुम अनोखे बिम्ब थे, अद्भुत मिथक थे।
मस्त, अनब्याहे, अछूते छन्द थे तुम !
इस तरह परिपूर्ण ....
तन तुम्हारा सान्ध्य सूरज की किरण था,
मन तुम्हारा किन्तु कस्तूरी हिरण था।
सरल, निर्मल औ' तरल अन्तःकरण था,
किन्तु उस पर अस्मिता का आवरण था।
एक और अनेक के परिवृन्द थे तुम !
इस तरह परिपूर्ण ....
तुम जले थे आग में, हिम में गले थे,
स्वयं के अन्तर्विरोधों में पले थे।
प्रकृति अस्थिर, किन्तु चेतन स्थिर मिला था,
क्योंकि उसमें ज्ञान का शतदल खिला था।
स्वयं ही गुरुदेव विजयानन्द थे तुम !
इस तरह परिपूर्ण ....
नीम तरु की सुखद छाया ठाँव था, बस,
आत्मचिन्तन ही तुम्हारा गाँव था, बस !
पक्षधर पीड़ित मनुजता के रहे थे,
इसलिए हर बार आँसू में बहे थे।
मुक्त भीतर और बाहर बन्द थे तुम !
इस तरह परिपूर्ण ....
भ्रम गया तो पूर्ण ब्रह्मानन्द थे तुम !
इस तरह परिपूर्ण ओमानन्द थे तुम !

भारतवर्ष के उत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान

मैक्समूलर ने सन् १८७० में वेदों को गडरियों के गीत, बच्चों की बिलबिलाहट, जादू टोने आदि की पुस्तकें बताया था। महर्षि दयानन्द ने वेदों का यथार्थ भाष्य किया और उन्हें सब सत्य विद्याओं का पुस्तक बताया। महर्षि दयानन्द ने बताया कि वेद ईश्वर का दिया ज्ञान है जो अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा- इन चार ऋषियों के हृदयों में ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में दिया। यह सभी मनुष्यों के लिए, मानवता का ज्ञान और विधान है।

१. जब महर्षि दयानन्द आए, तब हिन्दू जाति मृत प्रायः हो चुकी थी जैसे उसकी रीढ़ की हड्डी ही न हो। मुसलमानों और ईसाईयों के तर्कों का वे उत्तर न दे पाते थे। वे धड़ाधड़ मुसलमान और ईसाई बनते जा रहे थे। महर्षि दयानन्द ने हिन्दुओं के साथ-साथ इस्लाम और ईसाइयत की कमजोरियों का पर्दाफास किया। हिन्दुओं को उनके वास्तविक वैदिक धर्म से परिचित कराया। हिन्दुओं में आत्म गौरव और आत्म सम्मान भरा। हिन्दू मुसलमान और ईसाई बनने बन्द हुए। उल्टा मुसलमान और ईसाई बने हिन्दुओं को वापिस वैदिक धर्म में आने के लिए प्रेरित किया गया। हिन्दुओं को हटाओ की बजाय बढ़ाओ की प्रेरणा दी। जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द के शुद्धि अन्दोलन के रूप में सामने आया।

भारत के गवर्नर जनरल रहे श्री सी. राजगोपालाचार्य ने कहा था -"Dayanand came when there was chronic danger of Islam on one side and of Christianity on the other. He saved Hinduism from all dangers fighting against them boldly"

अर्थ- दयानन्द ऐसे समय में आए, जब एक तरफ इस्लाम का और दूसरी तरफ ईसाईयत का बड़ा खतरा था। उन्होंने उनसे बहादुरी से लड़कर हिन्दुओं को सब खतरों से बचाया।

२. वेद- महर्षि दयानन्द जब आए, तब वेद लुप्त प्रायः हो चुके थे। पण्डित लोग कहते थे कि वेदों को तो शंखासुर ले गया है। महर्षि दयानन्द ने उन्हें पुनः उपस्थित किया। उबट, सायण, महीधर आदि आचार्यों ने वेदों के अर्थों का अनर्थ कर दिया था। उन्हें देखकर जर्मनी के संस्कृत के विद्वान्

महर्षि का वेद भाष्य पढ़ने के बाद सन् १८८२ में मैक्समूलर ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैण्ड में ICS के विद्यार्थियों को भारत के सम्बन्ध में सात भाषण दिए थे। वे सातों भाषण "India, what can it teach us" नामक पुस्तक में प्रकाशित हुए थे। तीसरे भाषण में मैक्समूलर ने कहा था-

"I maintain that for a study of man there is nothing in the world equal in importance with the Vedas."

अर्थ- मैं मानता हूँ कि मानवता के अध्ययन के लिए वेदों के समान महत्त्वपूर्ण संसार में और कुछ भी नहीं है।

UNESCO ने ऋग्वेद को धरोहर (Heritage) स्वीकार किया है।

श्री अरविन्द घोष ने इसी सम्बन्ध में लिखा है-

"There is nothing fantastic in Dayanand's idea that Vedas contain truth of science as well as truth of religion. I will add my own conviction that Vedas contain the other truth of science the modern science does not at all possess"

अर्थ- दयानन्द का विचार कि वेदों में विज्ञान और अध्यात्म दोनों विद्यमान हैं अजीब नहीं है। मैं तो यह भी मानता हूँ कि वेदों में वह विज्ञान भी है जो आज के वैज्ञानिक नहीं जानते।

३. हिन्दी भाषा- हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनवाने का श्रेय महर्षि दयानन्द को है। अब से लगभग १४५ वर्ष पूर्व सबसे पहले महर्षि दयानन्द ने हिन्दी को देश की भाषा के रूप में पहचाना था। वे स्वयं गुजराती थे और संस्कृत के विद्वान् थे। पर उन्होंने अपना सारा लेखन और भाषण हिन्दी में किया। उनका दृढ़ मत था कि देश की एकता के लिए सारे देश की एक भाषा हो और वह भाषा देवनागरी लिपि में हिन्दी ही हो सकती है। हिन्दी को वे 'आर्य भाषा' के नाम से पुकारते थे।

बाद में मुंशी प्रेमचन्द ने भी अपना साहित्य हिन्दी में देकर हिन्दी के उत्थान में बड़ा योगदान किया।

गाँधी जी ने देवनागरी और उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जाने वाली हिन्दी-उर्दू मिश्रित भाषा को देश की भाषा बनाने की वकालत की थी और उस खिचड़ी भाषा का नाम हिन्दोस्तानी रखा था।

परन्तु भारत के संविधान निर्माताओं ने १४ सितम्बर १६४६ को १२ के मुकाबले ३१२ के भारी बहुमत से देवनागरी लिपि में हिन्दी को देश की राजभाषा के तौर पर स्वीकार किया था। हिन्दी भाषा के विस्तार के लिए आवश्यकता पड़ने पर शब्द लेने के लिए हमारे संविधान में विशेष तौर पर संस्कृत भाषा को नामित किया गया है।

४. स्वतन्त्रता अन्दोलन- महर्षि दयानन्द ने अपनी लेखनी और भाषणों द्वारा हिन्दुओं में स्वाधीनता की भावना भरी

जिसके परिणाम स्वरूप आर्यों ने स्वाधीनता संग्राम में बढ़चढ़ कर भाग लिया। अदीना स्याम् शरदः शतम्- अर्थात् हम स्वतन्त्र रहते हुए सौ वर्ष तक जीएँ- का वेदमन्त्र महर्षि ने हमें दिया।

कांग्रेस अध्यक्ष पट्टाभि सीता रमैया ने अपनी पुस्तक 'स्वतन्त्रता का इतिहास' में लिखा है कि स्वतन्त्रता अन्दोलन में ८५ प्रतिशत आर्य थे। बाकी १५ प्रतिशत में सनातनी, जैनी, सिख, मुसलमान, ईसाई सभी आ जाते हैं।

पट्टाभि सीता रमैया ने महर्षि दयानन्द को राष्ट्र पितामह बताया था जबकि गाँधी जी को राष्ट्रपिता। जो जो कार्य गाँधी जी ने अपनाए वे सब उससे पचास साल पहले महर्षि दयानन्द ने आरम्भ किए थे। उदाहरण- स्वदेशी, खादी और ग्रामोद्योग, अछूत उद्धार, महिला उत्थान, गो संरक्षण आदि। महर्षि ने बीज बोया और गाँधी जी ने फसल काटी।

डॉ. एनी बीसैंट एक अंग्रेज औरत थी जिसने भारत की स्वतन्त्रता के लिए काम किया। उसने कहा था- "When the Swaraj Temple is built there will be images of the leaders of the freedom movement and that of Swami Dayanand will be the tallest."

अर्थ- जब स्वराज का मन्दिर बनेगा, उसमें स्वतन्त्रता अन्दोलन के नेताओं के चित्र (बुत) लगेंगे और उनमें स्वामी दयानन्द का चित्र (बुत) सबसे बड़ा होगा।

मोती लाल नेहरू ने जेलों में घूमने के बाद गाँधी जी को जो रिपोर्ट दी थी उसमें कहा गया था कि जेलों में ८० प्रतिशत आर्य समाज के लोग हैं।

लाला लाजपत राय ने कहा था- आर्य समाज कट्टर राष्ट्रीयता में विश्वास रखता है।

महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रेरित होकर स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, पण्डित लेखराम, पण्डित गुरुदत्त, लाला लाजपत राय, भगतसिंह के दादा अर्जुन सिंह, पिता किशन सिंह, चाचा अजीत सिंह आदि कितने सज्जन समाज और राष्ट्र की सेवा में उतरे।

स्वामी श्रद्धानन्द, जिनका नाम पहले मुंशी राम था, ईसाईयत की ओर झुक रहे थे। महर्षि दयानन्द के साथ मुलाकात के बाद पक्के आर्य और राष्ट्रभक्त बन गए। लाला लाजपत राय इस्लाम की तरफ झुके हुए थे। वे आर्यों की संगति से आर्य बने और देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ते हुए शहीद हुए।

मौलवी महबूब अली जिला बागपत बड़ौत के पास बरवाला में बड़ी मस्जिद के इमाम थे। महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर वे इस्लाम को छोड़कर आर्य बन गए। अब वे महेन्द्रपाल आर्य के नाम से वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

५. शिक्षा- महर्षि दयानन्द ने बच्चों के लिए शिक्षा पर विशेष बल दिया था। उनके शिष्य आर्यों ने बहुत से आर्य स्कूल व कॉलिज स्थापित किए तथा दयानन्द ऐंग्लो वैदिक (D.A.V.) नाम से शिक्षण संस्थाओं का देश भर में जाल बिछा दिया है।

हिन्दू समाज में लड़कियों को पढ़ाना बुरा माना जाता था। महर्षि दयानन्द और आर्य समाज का ही प्रभाव है कि अब सभी हिन्दू अपनी लड़कियों को शिक्षा, बल्कि उच्च शिक्षा दिला रहे हैं।

६. समाज सुधार के कानून- हिन्दू विधवा स्त्री के पुनर्विवाह के विरुद्ध थे। सन् १८५६ में पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की कोशिश से अंग्रेज सरकार ने विधवा विवाह एक्ट बना दिया जिससे विधवा स्त्री के पुनर्विवाह को मान्यता मिल गई। परन्तु पण्डितों के विरोध के चलते यह कानून व्यवहार में न आ सका। बाद में जब आर्य समाज ने इस काम को अपने हाथ में लिया तभी विधवा विवाह का प्रचलन हुआ।

हिन्दू अपनी छोटी उमर की लड़कियों की शादी बड़ी उमर के आदमियों के साथ कर देते थे। आर्य समाज के प्रतिष्ठित नेता श्री हरविलास शारदा के प्रयास से सन् १९२९ में अंग्रेज सरकार ने इसके विरुद्ध कानून बना दिया जिसका नाम है - Child marriage restraint Act। तब उसका विरोध तिलक जैसे महानुभाव ने भी किया था। युक्ति थी ईसाई सरकार को हमारे धर्म में परिवर्तन करने का अधिकार नहीं है।

हिन्दू समाज में पति के मरने पर पत्नी को पति के साथ ही

जीवित ही जला देने की कुप्रथा थी जिसे सतीप्रथा कहते हैं। राजा राजमोहन राय के प्रयत्न से अंग्रेज सरकार ने सन् १८२८ में इसके विरुद्ध कानून बनाया। बाद में आर्य समाज ने इसे हाथ में लिया और दृढ़ता से इसका पालन किया और करवाया।

जन्म की जातपात तोड़कर विवाह को वैधता देने वाला जो कानून है वह आर्य समाज के बड़े नेता श्री घनश्याम सिंह गुप्त के प्रयास से अंग्रेज सरकार ने सन् १९३७ में बनाया था। उस एक्ट का नाम Arya Marriage Validation Act है। महर्षि दयानन्द ने जन्म की जातपात और छुआछूत को पूरी तरह नकारा था।

७. सत्यार्थप्रकाश- महर्षि दयानन्द ने एक अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' दिया। उसमें जन्म से मृत्यु तक मनुष्य को क्या-क्या करना चाहिए और कैसे जीना चाहिए सब ज्ञान वेदों के अनुकूल दिया गया है, संसार में व्याप्त सभी पन्थों (मजहबों) के गुण-दोष बताकर सभी को सचेत किया गया है, वेद के सार्वकालिक और सार्वभौमिक मानव धर्म पर प्रकाश डाला गया है और ईश्वर के सच्चे स्वरूप का वर्णन किया गया है। 'सत्यार्थप्रकाश' में ३७७ ग्रन्थों के सन्दर्भ हैं और १५४२ वेद मन्त्रों और श्लोकों के उदाहरण हैं। 'सत्यार्थप्रकाश' को पढ़कर लाखों लोग पाखण्ड, अन्धविश्वास, अज्ञान से निकल कर सत्य के प्रकाश का आनन्द लेने लगे हैं।

'सत्यार्थप्रकाश' के सम्बन्ध में वीर सावरकर ने कहा था- 'हिन्दुओं की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' अमर रहे। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।'

८. पाखण्ड और अन्धविश्वास पर चोट- महर्षि दयानन्द और उनके शिष्य आर्यों ने मूर्तिपूजा, ग्रह, फलित ज्योतिष, भूत-प्रेत, तागा-ताबीज, जादू-टोना आदि पाखण्ड और अन्धविश्वास पर तगड़ी चोट मारी। इन्हें अज्ञानता से पैदा हुई गलत धारणाएँ बताया। ईश्वर का सच्चा स्वरूप बताकर मूर्तिपूजा को हानिकर बताया। मनुष्य के सुख-दुख का कारण ग्रह नहीं। ग्रह तो जड़ हैं। वे किसी का भला या बुरा नहीं कर सकते। सुख-दुख का कारण मनुष्य के अपने अच्छे-बुरे काम हैं। उन कामों के फलस्वरूप ही मनुष्य को सुख-दुःख होता है। फलित ज्योतिष (Astrology) का

वेदों में या किसी भी वैदिक ग्रन्थ में कहीं कोई नामो-निशान नहीं है। ये सारी बातें साधारण लोगों को ठगने के साधन मात्र हैं। जो पहले था और अब नहीं रहा उसे भूत कहते हैं जैसे बीते समय का नाम भूलकाल है। किसी व्यक्ति के मरने पर मृतक शरीर का नाम प्रेत है। तागा-ताबीज, जादू-टोना आदि भी धूर्तों के द्वारा पैदा किए हुए टोटके हैं।

९. साहित्य शोधन- आर्यों (हिन्दुओं) के साहित्य को स्वार्थी लोगों ने अपनी मनमर्जी से मिलावट करके दूषित कर दिया है। महर्षि दयानन्द और उनके शिष्य आर्यों ने उस मिलावट को अलग करके सत्य साहित्य प्रकाशित किया जिनमें वाल्मीकि रामायण, महाभारत, मनुस्मृति आदि प्रमुख हैं। महर्षि दयानन्द ने सत्य और असत्य ग्रन्थों की सूची हमें दी कि कौन से ग्रन्थ पढ़ने चाहिये और कौनसे नहीं। जो ग्रन्थ सत्य वैदिक धर्म को प्रतिपादित करते हैं उन्हें पढ़ने योग्य की सूची में रखा और जो असत्य बातों से भरे हैं उन्हें न पढ़ने योग्य ग्रन्थों की सूची में रखा।

श्री कृष्ण के पवित्र और महान् जीवन चरित को कलंकित करके प्रसारित किया जाता है। महर्षि दयानन्द ने इस पर

तगड़ी आपत्ति उठाई और कहा कि 'महाभारत' की पुस्तक के अनुसार श्री कृष्ण एक धर्मात्मा और परोपकारी पुरुष थे। उन्होंने जन्म से लेकर मृत्यु तक कोई भी बुरा काम नहीं किया। महाभारत में राधा नाम की किसी स्त्री का कोई जिक्र नहीं है।

१०. नमस्ते और गायत्री मन्त्र- महर्षि दयानन्द ने अभिवादन के लिए सार्थक शब्द 'नमस्ते' दिया। जब भी दो व्यक्ति मिलें तो आपस में नमस्ते कहें। नमस्ते शब्द है- नमः + ते अर्थात् मैं आपका सम्मान करता हूँ। उसी में बड़ों के लिए आदर और छोटों के लिए प्यार की भावना छिपी है। वेदों में तथा अन्य वैदिक ग्रन्थों में अभिवादन के तौर पर 'नमस्ते' शब्द का ही प्रयोग किया गया है।

महर्षि दयानन्द ने विचारने के लिए तथा अमल करने के लिए वेद का मन्त्र 'गायत्री मन्त्र' दिया। इस मन्त्र में परमात्मा से उत्तम बुद्धि के लिए प्रार्थना की गई है। सभी मनुष्यों को उत्तम बुद्धि प्राप्त करने के लिए अच्छा सात्विक भोजन लेना चाहिए तथा बढ़िया पुस्तकों का स्वाध्याय करना चाहिए।

आज देश-विदेश में करोड़ों लोग अभिवादन के तौर पर 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग करते हैं तथा गायत्री मन्त्र का पाठ करते हैं।

प्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा था-

हमारा जितना उपकार महर्षि दयानन्द ने किया है उतना और किसी ने नहीं किया।

११. मुंशी प्रेमचन्द की लेखनी में समाज सुधार के विषय पर महर्षि दयानन्द का प्रबल प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने एक कहानी लिखी है 'आपका चित्र'। कहानी के नायक ने अपने कमरे में महर्षि दयानन्द का एक चित्र लटका रखा है। वह बता रहा है कि यह चित्र उसने क्यों लटका रखा है। 'मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च और पवित्र आचरण सदा मेरी आँखों के सामने रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाएँ अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व धैर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट वेला में उस पवित्र मोहिनी मूरत के दर्शनों से आकुल-व्याकुल हृदय को शान्ति हो, दृढ़ता धीरज बने रहें, क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं, कई बार।'

- कृष्ण चन्द्र गर्ग
८३१ सैक्टर १०, पंचकूला, हरियाणा

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

''सत्यार्थ-भूषण'' पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें ''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

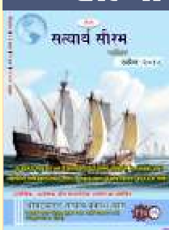

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

मनुष्य जीवन में होने वाले रोगों का प्रमुख कारण प्रायः कुपथ्य होता है। संसार में प्रत्येक कार्य के पीछे कारण होता है। यदि कारण न हो तो कार्य नहीं हो सकता। यह हमारी सृष्टि ईश्वर ने उपादान कारण 'प्रकृति' अर्थात् इस प्रकृति के सत्व, रजस तथा तमस सूक्ष्म कणों से बनाई है। यदि प्रकृति के त्रिगुणों वाले कण न होते तो इस सृष्टि का निर्माण सम्भव नहीं था। इसी प्रकार रोग के अनेक कारण होते हैं। इन कारणों से बचने के लिए स्वास्थ्य के नियम बनाये गये हैं जिनका पालन करने से मनुष्य स्वस्थ रहता है। मनुष्य अल्पज्ञ है। इस कारण अनचाहे वह अपनी अज्ञानतावश व असावधानी से रोगों से संक्रमित हो जाता है और फिर उपचार व पथ्य से रोग के कारणों को दूर करके स्वस्थ भी हो जाता है। अनेक असाध्य रोग भी होते हैं। ऐसे रोगों का उपचार ढूँढा जा रहा है। शायद भविष्य में हमारे विद्वान् व वैज्ञानिक उन्हें ढूँढ लें परन्तु कुपथ्य से बचना होगा और अपना ज्ञान बढ़ाकर स्वास्थ्य के नियमों का अधिकाधिक पालन करना ही होगा। स्वास्थ्य के नियमों की ही तरह सामाजिक जीवन व राष्ट्र को उन्नत बनाने के लिए देश के नागरिकों को अल्पज्ञता व अज्ञानता को दूर कर ज्ञान की प्राप्ति को अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाकर उसका पालन करना होता है। यदि ऐसा करते हैं तो हम, हमारा समाज व देश उन्नति के शिखर की ओर बढ़ता है और न करने पर घोर पतन होता है। हम व देशवासी दुःखों के गड्ढे में गिरते हैं। ऐसा ही महाभारत के बाद मुख्यतः मध्यकाल में हुआ। आज स्थिति यह है कि देश अज्ञान व अन्धविश्वासों से भरा हुआ है। इस कारण समाज समाज न होकर 'अज्ञानजन्य मिथ्या परम्पराओं व विषमताओं का मानव समूह' बन गया है। समाज को समाज अर्थात् सभी मनुष्यों में समानता व न्याय का व्यवहार कराने के लिए उनके अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड व कुरीतियों को दूर करना होगा। यह काम ऋषियों की उपस्थिति के कारण सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक तो पृथक् से करने की आवश्यकता नहीं पड़ी थी परन्तु उसके बाद ऋषियों के अभाव में अज्ञान व अन्धविश्वास, पाखण्ड एवं कुरीतियाँ वा मिथ्या परम्परायें आरम्भ हो गईं। इसका परिणाम देश की गुलामी था। इनके कारण देश को अनेक विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ा और आज भी देश की धार्मिक व सामाजिक स्थिति सन्तोष जनक नहीं है। इस स्थिति को दूर कर विजय पाने के लिए देश से अज्ञान व अन्धविश्वासों का समूल नाश व विद्या की वृद्धि कर इनका उन्मूलन करना होगा।

अन्ध विश्वास क्या है? यह अंधविश्वास ऐसा विश्वास है जो अन्धा है और जिसमें ज्ञान रहित विश्वास है। लोग ईश्वर को मानते हैं। यह उनका विश्वास है परन्तु अज्ञानता के कारण दूसरों की देखा-देखी व स्वार्थी मनुष्यों के छल के कारण वह बिना जाने व सोचे उसी मार्ग पर चलने लगते हैं। यदि कोई मूर्ति पूजा करे तो भी जड़, भावना व संवेदना शून्य, मूर्ति को खिलाने व उसे धन देने की क्या आवश्यकता है। क्या मूर्ति को दिया भोजन वह ग्रहण करती है? आप स्वयं प्रयोग कर के देख लीजिए। मन्दिरों में हनुमान जी की मूर्ति को मंगलवार के दिन बूंदी वा लड्डू आदि का प्रसाद चढ़ाया जाता है। पुजारी जी कुछ भाग मूर्ति के मुँह पर लगा देते हैं।

सप्ताह व उससे अधिक समय में भी हनुमान जी की कल्पित मूर्ति द्वारा वह खाया नहीं जाता। कुछ समय बाद उस पर मक्खियाँ बैठती हैं या यह चींटियों का भोजन बनता है। इसी प्रकार जो धन मन्दिरों व मूर्तियों पर चढ़ाते हैं, क्या मूर्ति को उसकी आवश्यकता है? वह धन व पदार्थ किसकी जेब में जाते हैं और उससे कितना धर्म और क्या-क्या अधर्म होते

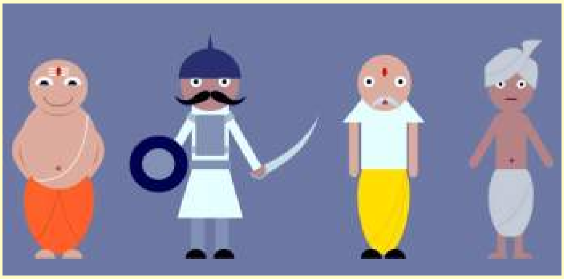

हैं, यह कोई नहीं जानता? अतः बिना जाने व सोचे समझे किये जाने वाले धर्म-कार्य अधिकांशतः अन्धविश्वास की श्रेणी में आते हैं। इसी प्रकार से अन्ध-परम्परायें होती हैं। जन्मना जातिवाद ऐसी ही प्रथा है। संसार में मनुष्य माता व पिता के द्वारा जन्म लेते हैं। ईश्वर ने किसी के चेहरे व अन्य स्थान पर उसके अमुक-अमुक जाति के होने का स्टीकर नहीं लगाया। यह जन्मना जाति व जाति सूचक शब्द हमारे ही अल्पज्ञानी पूर्वजों की देन हैं। इन जाति सूचक शब्दों में से कुछ तो उनके कार्य व गाँव आदि स्थान के सूचक भी होते हैं। परन्तु लोगों के गाँव व स्थान बदल गये और समय के साथ काम भी बदल गये परन्तु माथुर जाति सूचक शब्द जो मथुरा निवासी लोगों के लिए प्रयोग में लाया जाता था, वह नहीं बदला। हमारे पिता भवन निर्माण के कार्य से जुड़े थे। हमें पढ़ाया। हमने एक दुकान पर काम किया। वहाँ हम लोगों को टाईपिंग सिखाने लगे। हम विज्ञान स्नातक थे। पहले हमारी लिपिक के रूप में राज्य सरकार के कार्यालय में नौकरी लगी। फिर दूसरी केन्द्रीय सरकार के संस्थान में लगी। विज्ञान स्नातक होने से हम तकनीकी सहायक बने, फिर ५ बार प्रोन्नत होकर वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी बन गये। इसी प्रकार से हमारे बच्चे भिन्न-भिन्न काम कर रहे हैं। दो बैंक में अधिकारी हैं और एक अन्य सरकारी विभाग में। अब इन्हें हमारे पूर्वजों के जातिसूचक शब्दों से सम्बोधित किया जाये व उसके अनुसार हमारे साथ लोगों द्वारा सामाजिक व्यवहार हो तो यह उचित नहीं कहा जा सकता? अतः जन्मना जाति भी एक प्रकार का अन्धविश्वास व सामाजिक रोग है जिसने आर्य हिन्दू जाति को कमजोर व दुर्बल बनाया है। ऐसा ही शिक्षा की प्राप्ति के अधिकारों को लेकर है। हमारे समाज के तथाकथित ब्राह्मणों ने महिलाओं, शूद्रों, अन्त्यजों व निर्धनों के शिक्षा के अधिकार को ही छीन लिया। किसी ने घोषणा कर दी कि स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं है और युगों तक यही भ्रान्त धारणा समाज में विद्यमान रही। स्वामी दयानन्द जी के प्रयासों व वेदप्रमाण देने पर यह प्रथा व परम्परा कमजोर हुई परन्तु आज शिक्षा का व्यापारीकरण हो जाने से निर्धन व दुर्बल लोगों के लिए शिक्षा प्राप्त करना कठिन व असम्भव सा हो गया है। यह शिक्षा के व्यापारीकरण, मुनाफाखोरी अथवा स्वार्थ की प्रवृत्ति के कारण हो रहा है जो देश के लिए अत्यन्त हानिकारक व घातक है। ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं।

अन्धविश्वास दूर करना आवश्यक क्यों है? इसका उत्तर इस प्रकार से है। जैसे एक अबोध बालक को माता-पिता व बाद में स्कूल के शिक्षक ज्ञान कराते हैं व उसकी अविद्या को दूर करते हैं। जैसे एक सद्-चिकित्सक रोगी को औषधि एवं पथ्य से स्वस्थ करने का प्रयत्न करता है तथा देश के पुलिसकर्मी समाज में अपराध को रोकने के लिए बुरे लोगों को पकड़कर उन्हें जेल यातनायें आदि देकर उनका सुधार करने का प्रयत्न करते हैं। इसी प्रकार से धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वास भी न केवल मनुष्य विशेष अपितु समाज व देश को भी निर्बल बनाते हैं। अतः अन्धविश्वासों व मिथ्या परम्पराओं को पहचानना व उसका निदान करना किसी एक मनुष्य या संस्था का काम नहीं अपितु समूचे समाज व देश का काम है। इस काम में सबसे बड़ी बाधा लोगों का अज्ञान व उनके निजी स्वार्थ प्रतीत होते हैं। लोग धार्मिक व ज्ञान पर आधारित सामाजिक परम्पराओं का ज्ञान नहीं रखते। उन्हें इसके लिए एक धार्मिक नेता व आचार्य की आवश्यकता अनुभव होती है। इस स्थिति को जान व समझकर बहुत से कुपात्र यह काम करना आरम्भ कर देते हैं और अपनी दुर्वासनाओं की जी भरकर पूर्ति करते हैं। इसके कुछ उदाहरण अभी देश व समाज के सामने आये हैं। ऐसे बड़े-बड़े धार्मिक नेता जेल में हैं। यह तो एक बानगी मात्र है। ऐसा भी नहीं है किस भी धार्मिक आचार्य, सामाजिक नेता व उनके पूर्व आचार्य भी ऐसे ही रहे हों, परन्तु एक बात तो निश्चित है कि यह सभी आचार्य ईश्वरीय ज्ञान वेद के विपरीत बहुत-सी बातें व कृत्य करते हैं। कुछ सीमा तक इनका स्वार्थ भी सिद्ध होता है। यह आचार्यगण तपस्वी व त्याग का जीवन भी व्यतीत नहीं करते जैसाकि हमारे ऋषि व पूर्व धार्मिक पुरुष करते थे। संस्कृत व शास्त्रों की इनकी योग्यता न के बराबर या अति अल्प होती

है। ऐसे अनेक कारणों से यह सभी आचार्य अज्ञानता व अन्धविश्वास ही परोसते हैं व ज्ञानी होने का दम्भ भरते हैं। इनकी अविद्या क्योंकि केवल वेद के ज्ञानी विद्वान् ही पकड़ सकते हैं, इसी कारण यह उनसे शास्त्रार्थ या वार्तालाप भी नहीं करते। इसके पीछे इनका डर होता है। इससे पता चलता है कि किस प्रकार से देश व समाज में अन्धविश्वास व अविद्या बढ़ रही है।

अन्धविश्वास का कारण अविद्या व अज्ञान है। अविद्या व अज्ञान का नाश केवल वेद और उसके अनुकूल ग्रन्थ, शास्त्रों व पुस्तकों से होता है। लगभग १५० वर्ष पूर्व तक समस्त वैदिक साहित्य संस्कृत भाषा और वह भी अधिकांश मन्त्रों, श्लोकों, पद्य व सूत्रों आदि में होता था जिसे समझना कठिन था। ऋषि दयानन्द की कृपा से समस्त वैदिक साहित्य व उसका सार आज हिन्दी व देश की अन्य भाषाओं सहित अंग्रेजी में भी उपलब्ध है। एक ही ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में समस्त वैदिक साहित्य वा शास्त्रों का ज्ञान उपलब्ध है। महाभारत के उत्तर कालीन देशी-विदेशी मत, पन्थ, मजहब व सम्प्रदायों की मान्यताओं का परिचय एवं उनकी समीक्षा व खण्डन भी सत्यार्थप्रकाश में उपलब्ध होता है। इतना ही नहीं इस ग्रन्थ में यह भी बताया गया है कि संसार के सभी मनुष्यों का केवल एक ही धर्म 'वैदिकधर्म' है। वैदिक धर्म में सभी मतमतान्तरों की सभी अच्छी बातों का समावेश है और जो मिथ्या बातें मत-मतान्तरों में हैं, वह ऋषि दयानन्द जी के अनुसार उनके मत के आचार्यों व उनकी अपने मतों की हैं। ऋषि दयानन्द जी की यह भी महती कृपा है कि उन्होंने संसार के एक सत्य मत के सिद्धान्त व मान्यतायें जो सभी मनुष्यों के लिए समान रूप से माननीय व धारण करने योग्य हैं, उन्हें कुछ ही पृष्ठों में 'स्वमन्तव्यामन्तव्य' के नाम से प्रस्तुत व उपलब्ध कराया है। यदि संसार में सभी मताचार्य व उनके अनुयायी मनुष्य अपनी साम्प्रदायिक बातें छोड़कर केवल सत्यार्थप्रकाश के प्रथम दस समुल्लासों में उल्लेखित मान्यताओं वा सिद्धान्तों को ही स्वीकार कर लें, तो संसार से लोभ, हिंसा, अन्याय, घृणा, स्वार्थ, अशान्ति, रोग व शोकादि सभी का निवारण हो सकता है। जहाँ सत्यार्थप्रकाश और उसकी मान्यतायें होंगी, वहाँ असत्य, अविद्या, अज्ञान व अन्धविश्वास हो ही नहीं सकते। मत-पंथ-सम्प्रदाय-मजहब आदि की भी वहाँ आवश्यकता नहीं होगी। ऐसे समाज व देश में कोई ढोंगी व पाखण्डी बाबा नहीं होगा जो बहनों, माँ-बेटियों सहित देश के लोगों का आर्थिक, मानसिक व शारीरिक शोषण करे। वह समाज व देश ज्ञान व विज्ञान सम्पन्न व सभी सुखों से पूरित होगा। आईये, सत्यार्थप्रकाश पढ़ने और उसकी सत्य शिक्षाओं को धारण करने का व्रत लेकर अपना, समाज, देश व विश्व का कल्याण करने की पहल करें।

- १९६ चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१, चलभाष- ०९४१२९८५१२१

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री के. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.)

अब हम सृष्टि उत्पत्ति के सन्दर्भ में क्यों व किसने प्रश्नों पर क्रमशः विचार करते हैं।

(क) Big Bang Theory के सन्दर्भ में -

पूर्वोक्त Big Bang Theory में अनेक प्रश्न निम्नानुसार उपस्थित हैं।

(१) अनन्त सघन व अनन्त तापयुक्त शून्य आयतन वाले पदार्थ में अकस्मात् विस्फोट क्यों हुआ तथा इसे किसने किया?

(२) यदि Steven Weinberg के Big Bang पर विचार करें तो, वहाँ भी क्यों व किसने प्रश्न उपस्थित होंगे ही। यदि चेतन नियन्त्रक सत्ता को स्वीकार किया जाये, तो कहा जा सकता है कि उसने किया और जीवों के उपयोग में आने योग्य बुद्धिमत्तापूर्ण सृष्टि का निर्माण करने के लिए विस्फोट किया परन्तु अनीश्वरवादी इसका उत्तर कभी नहीं दे सकते।

एक वैज्ञानिक ने मुझसे पूछा कि यदि ईश्वर मानें, तो भी यह प्रश्न उठेगा कि ईश्वर ने अकस्मात् आज से लगभग १३.६ अरब वर्ष पूर्व ही क्यों विस्फोट किया? तो इसके उत्तर में ईश्वरवादी तो उचित उत्तर दे सकता है। चेतन तत्व इच्छा व ज्ञान शक्ति से सम्पन्न होता है। वह किसी कार्य का समय व प्रयोजन अपनी बुद्धि से निश्चित कर सकता है। कोई चिड़िया पेड़ से अमुक समय पर क्यों उड़ी? मैं अमुक समय पर अमुक कार्य क्यों करने बैठा? मैं भूख लगने पर भोजन करूँ वा नहीं करूँ, यह मेरी इच्छा व विवेक का विषय है, यहाँ 'क्यों' प्रश्न उचित नहीं है परन्तु वृक्ष से पत्ता क्यों गिरा? बादल अभी क्यों बरसने लगे, पानी नीचे की ओर क्यों बह रहा है? इन प्रश्नों का उत्तर अवश्य देने योग्य है। यहाँ इच्छा एवं विवेक नहीं है। इस कारण ईश्वरवादी Big Bang के समय व प्रयोजन के औचित्य को सिद्ध कर सकता है, अनीश्वरवादी कभी नहीं। मेरे यह कहने का प्रयोजन यह नहीं है कि ईश्वर के द्वारा Big Bang सम्भव है अर्थात् यदि बिग बैंग थ्योरिस्ट ईश्वर की सत्ता को मान लें, तो Big Bang Theory सत्य हो सकती है। नहीं, ईश्वर तत्व भी वर्तमान वैज्ञानिकों वाले Big Bang को सम्पन्न नहीं कर सकता है। Big Bang कैसे होता है? इसका समाधान ईश्वरवाद से भी नहीं मिल सकता है। ईश्वर भी अपने नियमों अर्थात् मूलभूत भौतिकी के नियमों के विरुद्ध कार्य नहीं कर सकता। हमने Big Bang Theory की समीक्षा में दर्शाया है कि इस थ्योरी में भौतिकी के कितने मूलभूत नियमों का उल्लंघन होता है? हाँ, यदि किसी लोक में विस्फोट माना जाये, वह लोक भी अनादि न माना जाये, साथ ही भौतिकी के पूर्वोक्त नियमों का उल्लंघन न हो, तब ईश्वर द्वारा विस्फोट किया जा सकता है परन्तु उस एक विस्फोट से ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का निर्माण होना सम्भव नहीं है। शून्य से ईश्वर भी सृष्टि की रचना नहीं कर सकता है। सृष्टि रचना के लिए अनादि जड़ उपादान कारण की आवश्यकता अवश्य होती है परन्तु जड़ पदार्थ में स्वयं गति, क्रिया नहीं होती, इस कारण इन्हें उत्पन्न करने में ईश्वर की भूमिका अवश्य होती है। अनन्त पदार्थ (अनन्त ताप अनन्त द्रव्यमान) से सान्त ऊर्जा व सान्त द्रव्यमान वाले ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति क्यों होती है? इसका उत्तर अनीश्वरवादी नहीं दे सकता, जबकि ईश्वरवादी इसका उत्तर देते हुए कह सकता है कि ईश्वर अपने प्रयोजनानुसार अनन्त पदार्थ से कुछ पदार्थ को उपयोग में लाकर ब्रह्माण्ड की रचना कर सकता है। जिस प्रकार लोक में कोई व्यक्ति पदार्थ विशेष से कुछ भाग लेकर अपनी इच्छा का प्रयोजनानुसार किसी वस्तु विशेष का निर्माण करने के लिए स्वतंत्र है, उसकी इच्छा वा प्रयोजन पर कोई अन्य व्यक्ति प्रश्न उपस्थित नहीं कर सकता, उसी प्रकार अनन्त पदार्थ से कुछ पदार्थ लेकर परमात्मा सान्त द्रव्यमान व ऊर्जा वाले ब्रह्माण्ड की रचना करता है। हम इस पर यह प्रश्न नहीं कर सकते कि उसके अनन्त पदार्थ का

शेष भाग का उपयोग क्यों नहीं किया अथवा अनन्त द्रव्यमान वा ऊर्जा से युक्त ब्रह्माण्ड क्यों नहीं बनाया? वैसे अभी तो यह भी प्रश्न अनुत्तरित है कि ब्रह्माण्ड सान्त है वा अनन्त? हमारी दृष्टि में ब्रह्माण्ड ईश्वर की अपेक्षा सान्त तथा हमारी अपेक्षा अनन्त है। हम जिस पदार्थ को ऐसा समझते हैं कि वह ब्रह्माण्ड बनाने में काम में नहीं आया, वह हमारी अल्पज्ञता ही है। वस्तुतः जो पदार्थ ऐसा है, वह भी ब्रह्माण्ड के संचालन आदि में परोक्ष भूमिका निभाता है। वह पदार्थ ही प्राण, मन, छन्द व मूल प्रकृति के रूप में विद्यमान रहता है। दूसरी बात यह भी है कि प्रारम्भ में द्रव्यमान, ऊर्जा जैसे लक्षण विद्यमान ही नहीं होते।

(२) दूर बिखरता हुआ पदार्थ संघनित होना कैसे प्रारम्भ करता है? अनीश्वरवादी दूर भागते हुए पदार्थ के संघनित होने का यथार्थ कारण नहीं बता सकता परन्तु ईश्वरवादी इसका इस प्रकार समाधान कर सकता है कि दूर भागते हुए पदार्थ को ईश्वर सृष्टि सृजन हेतु उससे सूक्ष्म तरंग रूप शक्तिशाली पदार्थ के द्वारा रोककर संघनित कर सकता है अर्थात् संघनन की प्रक्रिया प्रारम्भ कर सकता है।

क्रमशः..........

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक (वैदिक वैज्ञानिक)
('वेदविज्ञान-अलोकः' से उद्धृत)

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) — भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) — डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ११/१८

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (अष्टम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ प	१	मा	१		२	२ न		३	ह्म ३
४	४ र	४	श्व ४	४		५ अ	५	५	र ५
६	६	ति ६		७	वे	७	८	ना ८	८

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. विविधि सृष्टि को कौन प्रकाशित करता है?
२. कितने पदार्थ अनादि हैं?
३. जानने योग्य कौन है?
४. जगत् की उत्पत्ति में निमित्त कारण क्या है?
५. सृष्टि से पूर्व यह जगत् किससे आवृत था?
६. जगत् की उत्पत्ति में उपादान कारण क्या है?
७. 'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया' ....किस वेद का मंत्र है?
८. परमात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव कैसे हैं?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०९/१८ का सही उत्तर

१. परमेश्वर   २. दोनों नहीं   ३. जीवस्थ स्वरूप
४. नहीं   ५. यजुर्वेद   ६. पवित्रात्मा

"विस्तृत नियम पृष्ठ २४ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ दिसम्बर २०१८

सत्यार्थ-पीयूष

अद्भुत सृष्टि का रचयिता- ईश्वर

सूर्य से पृथ्वी की दूरी को दुगुना कर दिया जावे तो सब प्राणी ठण्ड के मारे मर जावेंगे, और दूरी आधी कर दी जावे सब प्राणी जल भुन जावेंगे। वैज्ञानिकों का निश्चित मत है कि इस पृथ्वी का जितना आकार है और सूर्य से जितनी दूरी है तथा अयन में घूमने का उसका जो वर्तमान वेग है, उसी के कारण पृथ्वी पर जीवधारियों का सुखपूर्वक रहना संभव है। स्पष्ट है इन आकारों, दूरियों व गतियों का निर्धारण सर्वोच्च बौद्धिक सत्ता 'ईश्वर' द्वारा किया गया है।

विविधता भी ईश महिमा गा रही है:-

सृष्टि में जो विविधताऐं पायी जाती हैं वह भी इसी सर्वोच्च ज्ञान गंगा के दर्शन करा रही हैं।

अहमिन्द्रो वरुणस्ते महित्वोर्वी गभीरे रजसी सुमेके।
त्वष्टेव विश्वा भुवनानि विद्वान्त्समैरयं रोदसी धारयं च॥

- ऋग्वेद ४/४२/३

जैसे पूर्ण विद्वान् शिल्पीजन उत्तम वस्तुओं को रचते हैं वैसे ही मुझसे विचित्र उत्तम-उत्तम जगत् रचा गया (व) धारण किया जाता है और जैसे मैंने (=ईश्वर ने) रचा वैसे अन्य जीव को सामर्थ्य रचने का नहीं है, किन्तु मेरे किये हुए कार्य से कुछ ग्रहण करके अपनी बुद्धि के अनुसार रचते हैं, यह जानना चाहिए।

किसी भी पारंगत से पारंगत मनुष्य की कृति ईश्वर की कृति के सम्मुख तुच्छ है। हम आज मनुष्य के बनाए चमत्कारिक आविष्कारों को देख विस्मय में पड़ जाते हैं पर तनिक भी विचार करें तो ईश्वरीय कारीगरी के समक्ष ये कुछ भी नहीं हैं। कतिपय उदाहरणों पर विचार करें। निष्णात् शिल्पकार को कहें कि मनुष्य की अनेक मूर्तियाँ बनाए जिनके चेहरे अलग-अलग आकृति के हों ताकि उन्हें पृथक्-पृथक् पहचाना जा सके। निश्चित रूप से वह सौ, हजार, दस हजार से अधिक ऐसी मनुष्याकृति नहीं बना सकता जो एक दूसरे से पृथक् चेहरा मोहरा रखती हों। पर ईश्वर की रचना यह मानव अरबों की संख्या में पृथ्वी पर है परन्तु प्रत्येक पृथक् से पहचाना जा सकता है यहाँ तक कि जुड़वा बच्चों में भी कुछ न कुछ भेद देखने में आता है। यह सृष्टिकर्त्ता की असीम सामर्थ्य है जो मनुष्य की कदापि नहीं हो सकती।

दूसरा उदाहरण- विश्व में अरबों मनुष्य हैं। सभी की अंगुलियों पर कुछ निशान होते हैं जिन्हें शंख, चक्र नामादि से जाना जाता है। किसी एक मनुष्य के ये निशान विश्व में दूसरे से मेल नहीं खाते और उनकी व्यक्तिगत पहचान के आधार बन जाते हैं। क्या इतनी अधिक विस्मयकारी रचना सिवाय ईश्वर के किसी की हो सकती है? कदापि नहीं। किसी चित्रकार को कागज के ऊपर इस प्रकार की विभिन्न अनुकृति बनाने को कहा जावे तो विविधता में वह सौ वा सहस्र से अधिक नहीं जा सकता।

एक और उदाहरण पर विचार करें। नर-नारी के कण्ठ में स्वरयंत्र होता है जिसमें से वायु के निकलने पर ध्वनि उत्पन्न हो ओष्ठादि के प्रयत्न से वर्णोच्चारण होता है।

भौतिकवादियों को चाहिये कि वे विचार करें कि स्वरयंत्रों की विभिन्नता (परिणाम आदि) के आधार पर यह तो संभव है कि कुछ हजार प्रकार के स्वर यंत्र बनाए जा सकने पर इनमें से भिन्न-भिन्न ध्वनि निकलने पर उनकी पहचान हो सके। पर अरबों में से प्रत्येक मनुष्य की आवाज में ऐसा वैशिष्ट्य कि बिना चेहरा देखे आवाज सुनकर ही कह दिया जावे कि यह अमुक व्यक्ति बोल रहा है, ऐसे स्वरयंत्र तथा उनकी क्रियाशीलता का निर्माता केवल सर्वशक्तिमान ईश्वर ही हो सकता है।

जरा सृष्टि में बिखरे रंगों को देखिये। तितलियों और पुष्पों को देखिये। आपके चारों और रंग ही रंग बिखरे पड़े हैं। ये

इतने विविध तथा नयनाभिराम हैं कि मनुष्य प्रलय पर्यन्त भी, रंगों के कितने भी संयोग बना ले इनकी विविधता व आकर्षण को स्पर्श भी नहीं कर सकता।

आप विचार करते जाऐं, प्रभु की सृजनशीलता का अन्त नहीं। स्थानाभाव के कारण यहाँ हमने संकेत मात्र किया है।

- अशोक आर्य, नवलखा महल, गुलाब बाग

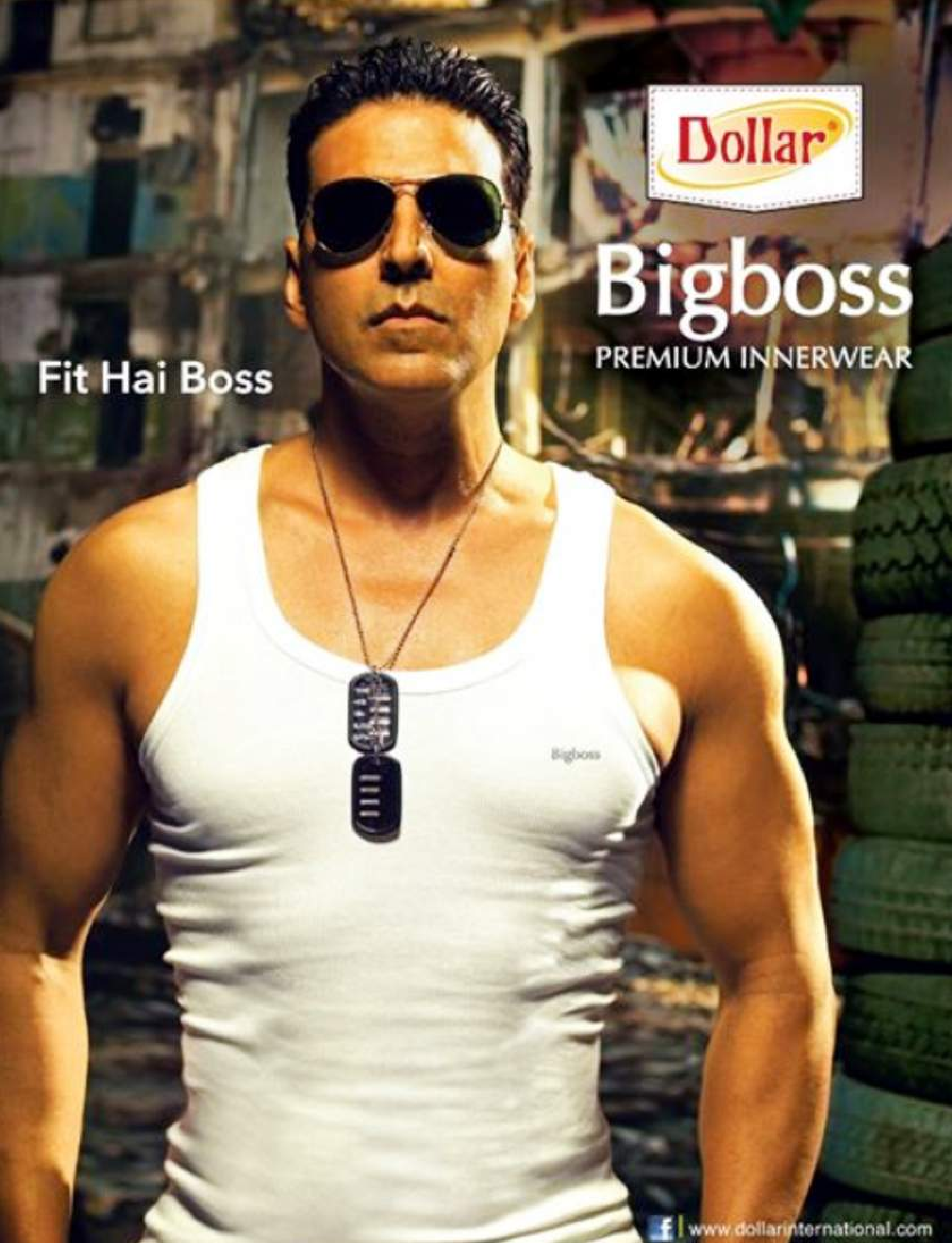
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 November-2018 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

जिस देश में ब्रह्मचर्य, विद्याग्रहणरहित बाल्यावस्था और अयोग्यों का विवाह होता है, वह देश दुःख में डूब जाता है। क्योंकि ब्रह्मचर्य्य विद्या के ग्रहणपूर्वक विवाह के सुधार ही से सब बातों का सुधार और बिगड़ने से बिगाड़ हो जाता है। -सत्यार्थप्रकाश, पृष्ठ ८१

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर